नवनीत

ISSN 2200 - 7644

ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

काव्य | साहित्य | शिक्षा | संस्कृति | दर्शन

अप्रैल – जून 2014, अंक 2 नंबर 10 – 12

वसुधैव कुटुम्बकम्

पूरी दुनिया एक ही परिवार है |

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत् ।।

(सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें,

और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।)

Bharatiya Vidya Bhavan AUSTRALIA

www.bhavanaustralia.org

नवनीत भारत से

'आराम' किस भाषा के नसीब में?

● आनंद गहलोत

'सुख' 'अर्थवाला' 'आराम' फ़ारसी शब्द है या संस्कृत शब्द है या दोनों भाषाओं की मिलीजुली सम्पत्ति? 'विश्रांत' का अर्थ कैसे बदल गया? अगर अशुद्ध उच्चारण का दंड 'नरक' हो तो हम सभी 'नरक' या 'नर्क' जायेंगे

ईरान में फ़ारसी ने और भारत में उर्दू ने 'आराम' को लेकर इतने ज़्यादा शब्द गढ़े और संस्कृत ने अपने ही इस शब्द की इतनी उपेक्षा की कि हिंदी के मूर्धन्य कोशकारों में से कुछ ने सुख अर्थ वाले 'आराम' को फ़ारसी शब्द माना और बाग-उपवन अर्थवाले 'आराम' को संस्कृत शब्द. वैसे 'आराम' के बाग-उपवन वाले अर्थ को हिंदी कब का नकार चुकी है.

कालिकाप्रसाद को छोड़कर अन्य प्रमुख हिंदी कोशकारों की दृष्टि में 'आराम' शब्द का भगवद्गीता में व्यवहृत 'सुख' अर्थ ओझल रहा; जिसे आधुनिक फ़ारसी भाषा की पूर्वज अवेस्ता भाषा ने शायद महाभारत काल में गीता के युग में ही अपना लिया था.

यह भी हो सकता है कि वैदिक 'रम्' (आनंदित होना, रमण करना) धातु से ईरान और भारत में एक साथ 'आराम' शब्द ने जन्म लिया 'सुख' अर्थ में.

भगवद्गीता के अध्याय 3 श्लोक 16 में श्रीकृष्ण कहते हैं- 'हे पार्थ (अर्जुन)! इंद्रियसुखों में रमण करनेवाला व्यर्थ ही जीता है.' 'अधायुरिंद्रियारामो मोघं पार्थ सा जीवति.'

ज़्यादातर हिंदी कोशकारों ने 'आराम' से फ़ारसी से उर्दू-हिंदी में आये 'सुख' अर्थ के इतने ज़्यादा शब्द देखे कि एक क्षण को भी उन्हें नहीं लगा कि संस्कृत में भी इस शब्द का यही मुख्य अर्थ था.

फ़ारसी भाषा ने हमें आराम बैठने के लिए 'आरामकुर्सी' दी. सोने-विश्राम करने के लिए शयनागार, विश्रामालय के बदले 'आरामगाह' शब्द दिया. आलस्यप्रिय (आलसी) काहिल, सुखेच्छ व्यक्तियों के लिए 'आरामतलब', 'आरामपसंद' दिया. सुखदायी के लिए 'आरामदेह' शब्द दिया. 'आरामदेह' शब्द की देखादेखी हिंदी ने 'आरामदायी' और 'आरामदायक' शब्द पिछले पचास वर्ष में गढ़ डाले हैं. ज्ञानमंडल के 'बृहत् हिंदी कोश' में ये शब्द नहीं है.

(क्रमशः)

कुलपति उवाच

अर्थप्रिय समाज की त्रासदी

जिस समाज में अर्थप्रिय मनुष्यों का ज़ोर हो, उस समाज में नेता वर्ग की दृष्टि संकुचित हो जाती है, क्योंकि वह प्रत्येक बात का विचार पैसे की दृष्टि से ही करता है. इस समाज में पैदा हो जाता है पूंजीवाद- बहुत कम मज़दूरी लेकर काम करने वाले करोड़ों गुलाम, जो घोर परिश्रम करते हैं और उसका फल मुट्ठी भर लोग भोगते हैं; मज़दूरों के शरीर और आत्मा को रौंद डालने वाली गरीबी; दान का आडम्बर जो घाव पर ही पट्टी बांधता है, पर घाव को भरता नहीं, कौटुम्बिक जीवन का ह्रास और स्त्रियों की खरीद-बिक्री में वृद्धि. ऐसे समाज में जिस मनुष्य को 'पूर्णत्व' प्राप्त करना हो, उसे या तो ज़िंदगी के बढ़ते हुए खर्च को पूरा करने के लिए अपनी स्वतंत्रता बेच कर अपने आत्मा को गंवा देना होगा, या चलता पुर्जा कहला कर, समाज में कोई प्रमुख पद प्राप्त करने की आशा छोड़ देने में ही संतोष मानना होगा.

(कुलपति के. एम. मुनशी भारतीय विद्या भवन के संस्थापक थे.)

सरस्वती मंदिर, बिट्स, पिलानी

बिट्स, पिलानी सेठ घनश्यामदास बिरला के बहुआयामी भविष्यदर्शी सोच का साक्षात् रूप है। यहाँ का अभियांत्रिकी महाविद्यालय बहुत पुराना और प्रतिष्ठित संस्थान है जो अपने शैक्षणिक स्तर और विस्तार के कारण आज स्वसाशी विश्विद्यालय का दर्ज़ा प्राप्त कर चुका है पिलानी कस्बे में स्थित यह संस्थान राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग में, भारत की राजधानी दिल्ली और राजस्थान की राजधानी जयपुर से लगभग समान दूरी कोई 225 किलोमीटर पर स्थित है।

रेतीला इलाका जिसे यहाँ उद्यमियों और अध्यवसायी लोगों ने अपने परिश्रम और जिंदादिली से रंगीन और विशिष्ट बनाया है। पिलानी आने वाले किसी भी व्यक्ति की दृष्टि विश्विद्यालय परिसर (विद्या - विहार) पहुँचने पर शिव-गंगा के पास स्थित सरस्वती-मंदिर की और गए बिना नहीं रह सकती। बिट्स के विस्तृत सभागार के मंच पर यदि कोई व्यक्ति दूरबीन से देखे तो वह मंदिर में स्थापित वीणा वादिनी सरस्वती की आदमकद मूर्ति के स्पष्ट दर्शन कर सकता है।

पहले से ही दक्षिण भारत और जयपुर के मूर्तिकारों द्वारा तराश कर और नंबर लगाकर भेजे गए सफ़ेद संगमरमर के हज़ारों खण्डों द्वारा निर्मित यह भव्य और नयनाभिराम मंदिर कोई तीन वर्षों में तैयार हुआ और जिसका उद्घाटन 1961 में मोरारजी देसाई के सान्निध्य में हुआ। घनश्यामदास बिरला ने अपने हाथों से सभी प्रमुख वास्तुकारों को सम्मानित किया।

इस मंदिर में भारत की सामायिक संस्कृति साकार देखने को मिलती है। आज विश्व में जहाँ धार्मिक कट्टरता और घृणा का घातक और खतरनाक वातावरण सब और दिखाई देता है वहाँ इस मंदिर में ज्ञान की देवी सरस्वती के आदमकद विग्रह के साथ-साथ विश्व के विभिन्न वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और विचारकों की मूर्तियाँ भी हैं जो ज्ञान और विचार को देश, काल, धर्म और भाषा की सभी सीमाओं से मुक्त करती नजर आती हैं। इस्लाम के पैगम्बर की मूर्तियाँ नहीं बनाई जातीं हैं अन्यथा इस संस्थान के स्वपनदर्शियों को उन्हें भी यहाँ स्थान देने में संकोच नहीं होता।

इस कट्टर समय में जब एक धर्म के लोग अपने प्रवर्तक का दुसरे धर्म के लोगों द्वारा नाम लिया जाना तक बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं वहाँ बिट्स के सरस्वती-मंदिर का यह उदार दृष्टिकोण विश्व का मार्गदर्शक हो सकता है।

शुभ कामनाओं सहित

कृष्ण कुमार गुप्ता

कृष्ण कुमार गुप्ता, संपादक

भारतीय राष्ट्र गान

जन गण मन

अधिनायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा

द्राविड़ उत्कल बंगा

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा

उच्छल जलधि तरंगा

तव शुभ नामे जागे

तव शुभ आशीष मांगे

गाहे तव जयगाथा

जन गण मंगलदायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

जय हे, जय हे, जय हे

जय जय जय जय हे!

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो

-ऋग्वेद 1-89-1

विषय-सूची

पियक्कड़ जी और डॉक्टर 8
हृदय की ज़मीन पर नाचती मीरा 9
गायत्री मंत्र 12
अन्तिम प्यार 13
अलग्योझा 14
मेघदूत 19
तिकड़ियां 23
पिया मिलन 25
मीरां बाई पदावली 26
जो बीत गई सो बात गई 28
तुलसी दास के दोहे 30
दोहे - धरम के 33
फैसला 35
अनाथ 39
चौथी का जोड़ा 44
कमजोर 47

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया
निर्देशक मंडल

पदाधिकारी:

अध्यक्ष	सुरेन्द्रलाल मेहता
कार्यकारी सचिव	होमी नव्रोजी दस्तूर
प्रधान	शंकर धर
सचिव	श्रीधर कुमार कोंदेपुदी

अन्य निर्देशक:

कृष्ण कुमार गुप्ता, श्रीनिवासन वेंकटरमन, पल्लादम नारायणा सथानागोपाल, कल्पना श्रीराम, जगन्नाथन वीराराघवन, मोक्षा वत्स

अध्यक्ष: गंभीर वत्स ओ ऐ एम्

संरक्षक: महामहिम श्रीमती सुजाता सिंह (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम प्रहत शुक्ला (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम राजेंद्र सिंह राठौड़ (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त)

मानद जीवन संरक्षक: महामहिम एम. गणपथी (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत कौंसुल जनरल और भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया के संस्थापक)

प्रकाशक व प्रबंध संपादक:
गंभीर वत्स ओ ऐ एम्
president@bhavanaustralia.org

संपादक :
कृष्ण कुमार गुप्ता

भाषा संपादक :
परवीन दहिया

विज्ञापन हेतु:
pr@bhavanaustralia.org

Bharatiya Vidya Bhavan Australia
Suite 100 / 515 Kent Street,
Sydney NSW 2000

यह जरुरी नहीं है कि नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में योगदानकर्ताओं के विचार, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट या संपादक के विचार हों। नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट किसी भी योगदान लेख और प्रस्तुत पत्र को संपादित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। *कॉपीराइट:* प्रस्तुत सभी विज्ञापन और मूल संपादकीय सामग्री भवन ऑस्ट्रेलिया की संपत्ति है और इन्हें कॉपीराइट के मालिक की लिखित अनुमति बिना पुन: पेश नहीं किया जा सकता।

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट: अंक 2 नंबर 10-12, ISSN 2200 – 7644

Australian National Anthem

Australians all let us rejoice,
For we are young and free;

We've golden soil and wealth for toil;
Our home is girt by sea;

Our land abounds in nature's gifts
Of beauty rich and rare;

In history's page, let every stage
Advance Australia Fair.

In joyful strains then let us sing,
Advance Australia Fair.

Beneath our radiant Southern Cross
We'll toil with hearts and hands;

To make this Commonwealth of ours
Renowned of all the lands;

For those who've come across the seas
We've boundless plains to share;

With courage let us all combine
To Advance Australia Fair.

In joyful strains then let us sing,

पियक्कड़ जी और डॉक्टर

(समझाने के लिए कभी-कभी समानांतर कुतर्क सहारा देता है)

पियक्कड़ जी मरने पर थे उतारू,
इसलिए डॉक्टर ने बन्द कर दी दारू।
और जब तलब के कारण मरने लगे,
तो डॉक्टर से तर्क करने लगे।

—अगर मैं अंगूर का रस निकालूं
उसे अपने प्याले में
डालूं
और पीने का लूं
डिसीजन,
तो डॉक्टर साब
ऐनी ऑब्जैक्शन?

डॉक्टर बोले—
नहीं, नहीं बिलकुल
नहीं!
—अगर उसमें
थोड़ा सा पानी
डालूं और चम्मच
से चला लूं?

—नहीं नहीं फिर
भी नहीं!

—अगर उसका ख़मीर उठा लूं,
और गटागट चढ़ा लूं?
डॉक्टर महाशय थे पूरे अक्खड़,
बोले— मिस्टर पियक्कड़!
अगर मैं आव देखूं न ताव देखूं,
और मुट्ठी भर रेत आपके ऊपर फेंकू,
तो रेत शरीर पर फैल जाएगी,
लेकिन क्या चोट आएगी?

—नहीं नहीं
बिल्कुल नहीं।

—अगर उसमें
थोड़ा सा
पानी डालूं
और मिलाकर
मारूं?

—नहीं नहीं
फिर भी नहीं!

—अगर उस
गीली मिट्टी
को पका लूं,
और ईंट बना
लूं?

पियक्कड़ बोले— कृपा कीजिए,
नहीं पिऊंगा रहने दीजिए।

—अशोक चक्रधर

हृदय की ज़मीन पर नाचती मीरा

—चौं रे चम्पू! आज बज़ट की उपलब्धीन ते अलग कोई कथा हतै तेरे पास?

—कथा नहीं है, 'कथा' नाम की पत्रिका है। इसके संस्थापक संपादक कथाकार मार्कंडेय थे, आजकल इसे अनुज निकाल रहे हैं। अनुज जामिआ मिल्लिआ इस्लामिआ में मेरे शोधछात्र रहे हैं। 'दूरदर्शन की हिन्दी : अभिव्यक्ति एवं प्रस्तुति-कला' विषय पर उन्नीस सौ पिच्चानवै में पंजीकरण कराया था। अच्छी गति से कार्य किया और जल्दी ही पी एच डी उपाधि पा गए। अभिव्यक्ति एवं प्रस्तुति-कला के ज्ञान की एक निदर्शना यह है कि अपने नाम के आगे 'डॉ.' नहीं लगाते। नाम के पीछे का कुमारभी हटा दिया। यानी नाम के आगे-पीछे के सम्मानों से कोई लगाव नहीं। अच्छा काम करने की तमन्नाओं से लबरेज़ रहते हैं।

—का अच्छौ काम कियौ?

—'कथा' के बैनर तले, उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के हिंदी संस्थान के साथ मिलकर राजस्थान की राजधानी जयपुर में भक्त कवि मीराबाई पर एक सेमिनार कराया। अनुज ने मुझे भी न्यौता दिया। वे मानते हैं कि आज मीराबाई को और भी गहराई से समझने की दरकार है।

—चौं, अब ताईं नायं समझे का मीराबाई कूं?

—समझे तो हैं, पर भक्ति की भावुकता के साथ। आज के साहित्यिक विमर्शों के समानांतर मीरा को नहीं देखा गया। मीरा की कथा के सारे पहलू नहीं खंगाले गए। जबकि आज के दौर के सभी विमर्शों से मीरा जुड़ती हुई दिखाई देती हैं। वर्तमान व्यथा की बहुत कथाएं निकलती हैं मीरा के काव्य से। इसलिए अनुज ने 'कथा' कामीराबाई पर विशेष अंक निकाला। काफ़ी चर्चित हुआ। सेमिनार में भी लगभग उन्हीं मुद्दों पर चर्चा हुई जो 'कथा' के इस अंक में थे।

जबकि आज के दौर के सभी विमर्शों से मीरा जुड़ती हुई दिखाई देती हैं। वर्तमान व्यथा की बहुत कथाएं निकलती हैं मीरा के काव्य से।

—कौन कौन सौ मुद्दा उठौ, बता।

—याद होगा आपको कि गुलज़ार ने मीरा पर एक फ़िल्म बनाई थी। शायद वहीं से मीरा पर नए सिरे से चिंतन प्रारंभ हुआ। गुलज़ार मानते थे कि मीरा के काव्य मेंबाक़ायदा सोशल कंसर्न हैं। लोकप्रिय सिनेमा की अपनी सीमा होती है। कई स्तरों पर भावनाओं का सरलीकरण होता है, तो जबरीमल्ल पारख ने

कहा कि गुलज़ार की 'मीरा' स्त्री-मुक्ति का औसत व्याख्यान है। मीरा-विमर्श और चलना चाहिए। विश्वनाथ त्रिपाठी जी को दिखा कि मीरा की भक्ति ने एक नए जेंडर का निर्माण कियाहै। किसी ने मीरा के काव्य को स्त्री-स्वतंत्रता और संघर्ष का काव्य माना। किसी ने कहा कि वे विद्रोहिणी थीं। किसी ने उन्हें भक्ति का आध्यात्मिक विपणन मानातो किसी को काम-भावना की काव्यात्मक अभिव्यक्ति दिखी। अनामिका ने मनचीते परमपुरुष की कामना में आसन्न पुरुष का क्रिटीक प्रस्तुत किया। अल्पना मिश्रने कहा कि वहां तिनके की ओट से स्त्री साहस का दमकता संसार है।

—तू का सोचै?

—चचा, मध्यकालीन दौर में स्त्री की क्या स्थिति थी, यह सोचना वाजिब है, पर मुझे नहीं लगता कि अगर उन्होंने पैरों में घुंघरू बांधे थे तो इसलिए कि स्त्री के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ना है। मुझे नहीं लगता कि उन्हें किसी सामाजिक आंदोलन की नेत्री बनना था। पग में घुंघरू बांधकर वे प्रेम-दीवानी हो गईं थीं। लोगों ने कुछ भीकहा, सास ने कुलनाशिनी कहा, समाज ने ग़लत माना पर वे अपनी धुन में मगन थीं। विष का प्याला आया, नहीं आया, ये ऐतिहासिक खोज के विषय हैं। वे तो कृष्णमयी थीं और दर्शन की प्यासी रहती थीं। उनके प्रभु गिरधर नागर थे, उनके अलावा कोई और नहीं। परमपुरुष एक ही था और कोई दूसरा नहीं, यह उनका मूलमंत्र था। जब चेतना-गायकी में 'दूसरौ न कोई' था, तो उद्देश्य भी 'दूसरौ न कोई' था? प्रेम उनके काव्य का मुख्य प्रोडक्ट है, विद्रोह बाईप्रोडक्ट। मीरा हृदय की ज़मीन नाचती हुई एक ऐसी ताक़त का नाम है जिसे कोई हरा नहीं सकता।

—नामबर जी का बोले।

—वही बोले जो पहले भी बोल चुके थे, लिख चुके थे। पर अद्‌भुत वक्ता हैं नामवर जी। सरलता में जटिल समीक्षाई करते हैं। उन्होंने कहा कि मीरा जानती थीं कि उनकादर्द कोई नहीं जानता। सूली ऊपर है सेज पिया की। हिन्दी में ऐसी उपमा किसी ने नहीं दी है। एक भी मुश्किल शब्द नहीं है। ये जो सादगी है, दिल से साफ है, शब्द भी साफ हैं। सीधे तीर की तरह से जबान से निकलने वाला भाषा है। दो टूक बात, कोई उलझाव नहीं, सीधी प्रेम की प्रभावशाली वाणी। नामवर जी से सहमत हूं चचा, उनसेनहीं जो प्रेम की ताक़त नहीं जानते।

—अशोक चक्रधर, उपाध्यक्ष, हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार एवं उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, यूट्यूब पर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' के बारे में इस लिंक पर जाएं:
http://www.youtube.com/watch?v=BlK4Ik_XiJM

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक नवोन्मेष हेतु
एक अभिनव स्थापना

संस्थापक–संरक्षक
वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं
शक्तिस्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा

डॉ. प्रणव पण्ड्या
एमडी (मेडीसिन)

कुलाधिपति	देव संस्कृति विश्वविद्यालय
प्रमुख	अखिल विश्व गायत्री परिवार
निदेशक	ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
संपादक	अखण्ड ज्योति (मासिक पत्रिका–8 भाषाओं में)
अध्यक्ष	स्वामी विवेकानन्द योग अनुसन्धान संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दिनांक–अप्रैल 05, 2014

आत्मीय श्री गम्भीर वत्स जी, अभिवादन

हमारे प्रतिनिधि श्री जितेन्द्र मिश्र, श्री ओंकार पाटीदार एवं श्री छविलाल की गरिमामयी उपस्थिति में 22-23 मार्च को आस्ट्रेलिया के डार्लिंग हार्बर में सम्पन्न हुए होली महोत्सव के बारे में विस्तार से जानकारी मिली। यह सिडनी के दर्शनीय स्थलों में से एक है। इसकी शुरूआत आपकी उपस्थिति में सम्पन्न हुए गायत्री महायज्ञ के माध्यम से हुई। आपने शांतिकुञ्ज के साथ गायत्री परिवार सिडनी को विशेष स्थान दिया। इसके लिए हम हार्दिक बधाई प्रेषित करते हैं।

टोली सहित चि0अनिल देसाई, उमंग वानी, संजीव राय द्वारा प्रज्ञागीत-गणेश स्तुति-होली गीत, प्रज्ञायोग एवं एडवांस आसन का प्रदर्शन, मुख्य मंच के निकट ही गायत्री परिवार को निःशुल्क स्टॉल लगाना, नीरज राम द्वारा यज्ञ की वैज्ञानिक व्याख्या, प्रमोदिनी ठक्कर, श्वेता अग्रवाल, जाग्रति पटेल, अर्चना चौधरी द्वारा सहयोगी की भूमिका निभाना, मुख्य मंच में विशिष्टि अतिथियों के साथ शांतिकुञ्ज प्रतिनिधियों को स्थान दिया जाना जैसे बहुत ही उपयोगी प्रयास हुए। इससे मन हर्षित है।

आपको शांतिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने ब्रिसबेन अश्वमेध महायज्ञ में आने के लिए आमंत्रण दिया होगा। हम भी आपसे आने की अपेक्षा रखते हैं। जब कभी भारत आना हो गंगा की गोद हिमालय की छाया में बसे शांतिकुञ्ज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय (www.awgp.org, www.dsvv.org) में आने के लिए भाव भरा आमंत्रण प्रेषित कर रहे हैं।

बहिन जी सहित घर के सहित सभी स्वजनों एवं भारतीय विद्या भवन सिडनी के सभी पदाधिकारियों को नवरात्रि, नवसंवत्सर, रामनवमी के उपलक्ष्य में ऋषि युग्म का स्नेह भरा आशीर्वाद कहें।

प्रति,
श्री गंभीर वत्स जी
भारतीय विद्याभवन सिडनी
आस्ट्रेलिया

(डॉ0प्रणव पण्ड्या)

मुख्य परिसर : गायत्रीकुञ्ज–शान्तिकुञ्ज विस्तार, हरिद्वार–249411, उत्तराखण्ड, हिमालय – भारत
Tel : +91-1334-260602, 260309, 260723, 261367 • Fax : +91-1334-260866
e-mail : shantikunj@awgp.org • Website : www.awgp.org | www.dsvv.org

Holi Mahotsav 2014 - Post Event Report

Over two sunny days Bharatiya Vidya Bhavan Australia celebrated the 12th anniversary of the Holi Mahotsav starting on Saturday 22 March and finishing on Sunday 23 March 2014 at Tumbalong Park in Darling Harbour, Sydney. An estimated 15000 - 20000 people attended the festivities.

Over five hundred artists performed during the festival days and represented a rich mixture of culture, spirituality and entertainment. The cultural performances included: Indian, contemporary, classical, folk and belly dances, fusion and folk music, Punjabi songs, Balinese and Chinese performances and a street dance which engaged into dance the standing audiences.

And we had Yoga, prayers, chanting, meditation and dance and art workshops over the two days. Another

feature was Did You Know and One City Celebrates exhibitions from Bhavan's special marquee.

This year Bhavan's Chandigarh Vidyalya (School) participated: students and teacher presented a variety of authentic Indian music and dances.

Highlights of Saturday (Spiritual Day) include: Rath Yatra of Lord Jagannätha (Street parade with hand pulled Cart) starting from Hyde park passing through the main streets of Sydney City CBD and culminating in to Darling Harbour by ISKCON and Yagna (Sacred fir ceremony) by The World Gayatri Pariwar visiting from Haridwar, India.

The audience enjoyed delicious vegetarian Indian food and craft stalls.

On Sunday the traditional practice of colour throwing took place in the designated area in multiple sessions throughout whole afternoon. This joyful activity brought many people of different cultural background together and was celebrated with happiness and harmony among the participants and viewers.

During the special VIP session held on the Sunday the special guests expressed the importance of such events as Holi Mahotsav and demonstrated their support and pleasure of being part of the celebrations. Among the respected speakers who graced the festival there were: The Hon. John Robertson MP, Leader of the Opposition & Deputy Leader of the Opposition; Hon. Amanda Fazio MLC, Opposition Whip; Felice Montrone, Deputy Chairperson of Community Relations Commission; The Hon. Arun Kumar Goel, Consul General of India; Paul Andersen, Director, Strategic Place Management Sydney Harbour Foreshore Authority; Kersi Meher – Homji, Prolifics Sport Writer and Peace Contributor; Dr Phil Lambert, General Manager, Australian Curriculum Assessment and Reporting Authority; Mrs Alka Goel; Ana Tiwary, Producer / Director Individual Films; Shanker Dhar.

The success of Holi Mahotsav could not have been possible without the selfless untiring support of nearly thousand artists and performers from a large number of dance academies and cultural groups. We bow before and salute them with humility and greatest gratitude. The crowd passionately danced and sang with the performers and enjoyed every bit of the multicultural program.

Our special thanks come to all performing artists – All World Gayatri Parivar; Bhavan Vidyalaya, Chandigarh; Aparna Dixit; Sahaja Yoga; Aziff Tibal Belly Dance; Chinese Traditional Dance; Expression; Rythmic Squad; Hip Hoppers; The Global Gypsies; Arpita Shome; Indian Mystique Pty Ltd; Kiran Shah; Taraana Indian Classical Dance; Rhythms Dance Troupe; Nartan Institute of Perfroming arts; Geetanjali School of Dance and Performing Arts; Mango Dance; Nupur Dance Group; SGGHS Bollywood; Team Ace Japanese Dance Group; Shysta Sodhi; Aleem Mohammed and Shireen Mohammed; Electric Korma Musical Band; Prabhu OSONIQS Rhythm and Bhangra Performers.

The stage performances were provided under direction of our eternal and incredible stage managers Manju Chand Raja and Bhoji Watts assisted by great masters of ceremonies: Monalisa Grover, Soim Raja, Jignasha Bhatt and Saurabh Arora.

The food stalls during the Holi Mahotsav pepped up the festival by adding variety to the event. A wide selection of delicious Indian vegetarian meals, beverages and sweets was offered by renowned

Indian restaurants: Taj Sweets & Restaurant and Khaana Khazanna. Stay Cool Tropical Sno, Sugar Cane Juice and Fresh Sugarcane Juice brought cooling and calming drinks.

This year we introduced Merchandise marquees instead of stalls showcasing traditional dresses, tops, fashion accessories, fancy bangles by The Saree Collection and artistic Henna art tattoos from Zenat Art Henna Tattoos and Psychic Readings)Tarrot and Palmistry).

Indian Mystique offered free dance workshops for kids and face painting. Among other craft marquees we had: India Tourism Sydney - Incredible India UAE Exchange Australia PTY LTD, TV, Bank of Baroda, Central Equity, TEG Immigration.

We express our heartfelt gratitude to our main sponsors and supporters: NSW Government: Premier of NSW, Community Relations Commission for a Multicultural NSW, India Tourism, Sydney and Sydney Harbour Foreshore Authority. We are grateful to the LAC City Central NSW Police for supporting with street parade and ISKCON Sydney for organising and running Rath Yatra.

Holi Mahotsav has become an integral part of the month long *Living in Harmony Festival* hosted by the City of Sydney and we are grateful to them for inclusion.

We are grateful to our media supporters Sydney Morning Herald, ZEE TV, Easter Suburn Newspapers, Desi Kangaroo, The Indian Telegraph, Indus Age, Indian Link, The Indian Down Under, Punjab Times, Masala Newsline, Navtarang Newspaper & Radio, Nepalese Times and the Epoch Times, SBS TV who join us in making this 2013 festival even brighter and diverse.

We applaud with immense gratitude the help of the volunteers Karina Flores Sasse, Jonathan Perticara, Katerina Hristovska, Nagma Ansari, Shirin Ansari, Tarun, Charisma Kaliyanda, Anousheh, Joshna, Dhiya, Marvin, Divya, Nisha, Nabila, Navjeet, Gio, Amy, Bushra Qazi, Dheeraj Kishnani.

We acknowledge the support of Mr Sridhar Kumar Kondepudi, Director Bhavan Australia and Mr Govinda Watts in managing the security.

And we acknowledge with deep gratitude the contribution of our incredible staff Jesica Flores Sasse, Shabana Begum, Parveen Dahiya, Jessica Zheng, Jignasha Batt for their valuable contribution without which we would not have been able to host the festival.

We are grateful to Brendan Burke, Alison Jenny, Gracie Low, Desiree Lane, Graham, Peter Malony, Peter Baker and other staff from Sydney Harbour Foreshore Authority for their valuable contribution in hosting this festival.

अलग्योझा

पन्ना की बातें सुनकर मुलिया समझ गई कि अपने पौबारह हैं। चटपट उठी, घर में झाड़ू लगाई, चूल्हा जलाया और कुएँ से पानी लाने चली। उसकी टेक पूरी हो गई थी।

गाँव में स्त्रियों के दो दल होते हैं—एक बहुओं का, दूसरा सासों का! बहुएँ सलाह और सहानुभूति के लिए अपने दल में जाती हैं, सासें अपने में। दोनों की पंचायतें अलग होती हैं। मुलिया को कुएँ पर दो-तीन बहुएँ मिल गई। एक से पूछा—आज तो तुम्हारी बुढ़िया बहुत रो-धो रही थी।

मुलिया ने विजय के गर्व से कहा—इतने दिनों से घर की मालकिन बनी हुई है, राज-पाट छोड़ते किसे अच्छा लगता है? बहन, मैं उनका बुरा नहीं चाहती: लेकिन एक आदमी की कमाई में कहाँ तक बरकत होगी। मेरे भी तो यही खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने के दिन हैं। अभी उनके पीछे मरो, फिर बाल-बच्चे हो जाएँ, उनके पीछे मरो। सारी जिन्दगी रोते ही कट जाएगी।

एक बहू-बुढ़िया यही चाहती है कि यह सब जन्म-भर लौंडी बनी रहें। मोटा-झोटा खाएं और पड़ी रहें।

दूसरी बहू—किस भरोसे पर कोई मरे—अपने लड़के तो बात नहीं पूछें पराए लड़कों का क्या भरोसा? कल इनके हाथ-पैर हो जायेंगे, फिर कौन पूछता है! अपनी-अपनी मेहरियों का मुंह देखेंगे। पहले ही से फटकार देना अच्छा है, फिर तो कोई कलक न होगा।

मुलिया पानी लेकर गयी, खाना बनाया और रग्घू से बोली—जाओं, नहा आओ, रोटी तैयार है।

रग्घू ने मानों सुना ही नहीं। सिर पर हाथ रखकर द्वार की तरफ ताकता रहा।

मुलिया—क्या कहती हूँ, कुछ सुनाई देता है, रोटी तैयार है, जाओं नहा आओ।

रग्घू—सुन तो रहा हूँ, क्या बहरा हूँ? रोटी तैयार है तो जाकर खा ले। मुझे भूख नहीं है।

मुलिया ने फिर नहीं कहा। जाकर चूल्हा बुझा दिया, रोटियाँ उठाकर छींके पर रख दीं और मुँह ढाँककर लेट रही।

जरा देर में पन्ना आकर बोली—खाना तैयार है, नहा-धोकर खा लो! बहू भी भूखी होगी।

रग्घू ने झुँझलाकर कहा—काकी तू घर में रहने देगी कि मुँह में कालिख लगाकर कहीं निकल जाऊँ? खाना तो खाना ही है, आज न खाऊँगा, कल खाऊँगा, लेकिन अभी मुझसे न खाया जाएगा। केदार क्या अभी मदरसे से नहीं आया?

पन्ना—अभी तो नहीं आया, आता ही होगा।

पन्ना समझ गई कि जब तक वह खाना बनाकर लड़कों को न खिलाएगी और खुद न खाएगी रग्घू न खाएगा। इतना ही नहीं, उसे रग्घू से लड़ाई करनी पड़ेगी, उसे जली-कटी सुनानी पड़ेगी। उसे यह दिखाना पड़ेगा कि मैं ही उससे अलग होना चाहती हूँ नहीं तो वह इसी चिन्ता में घुल-घुलकर प्राण दे देगा। यह सोचकर उसने अलग चूल्हा जलाया और खाना बनाने लगी। इतने में केदार और खुन्नू मदरसे से आ गए। पन्ना ने कहा—आओ बेटा, खा लो, रोटी तैयार है।

केदार ने पूछा—भइया को भी बुला लूँ न?

पन्ना—तुम आकर खा लो। उसकी रोटी बहू ने अलग बनाई है।

खुन्नू—जाकर भइया से पूछ न आऊँ?

पन्ना—जब उनका जी चाहेगा, खाएँगे। तू बैठकर खा: तुझे इन बातों से क्या मतलब? जिसका जी चाहेगा खाएगा, जिसका जी न चाहेगा, न खाएगा। जब वह और उसकी बीवी अलग रहने पर तुले हैं, तो कौन मनाए?

केदार—तो क्यों अम्माजी, क्या हम अलग घर में रहेंगे?

पन्ना—उनका जी चाहे, एक घर में रहें, जी चाहे आँगन में दीवार डाल लें।

खुन्नू ने दरवाजे पर आकर झाँका, सामने फूस की झोंपड़ी थी, वहीं खाट पर पड़ा रग्घू नारियल पी रहा था।

खुन्नू— भइया तो अभी नारियल लिये बैठे हैं।

पन्ना—जब जी चाहेगा, खाएँगे।

केदार—भइया ने भाभी को डाँटा नहीं?

मुलिया अपनी कोठरी में पड़ी सुन रही थी। बाहर आकर बोली—भइया ने तो नहीं डाँटा अब तुम आकर डाँटों।

केदार के चेहरे पर रंग उड़ गया। फिर जबान न खोली। तीनों लड़कों ने खाना खाया और बाहर निकले। लू चलने लगी थी। आम के बाग में गाँव के लड़के-लड़कियाँ हवा से गिरे हुए आम चुन रहे थे। केदार ने कहा—आज हम भी आम चुनने चलें, खूब आम गिर रहे हैं।

खुन्नू—दादा जो बैठे हैं?

लछमन—मैं न जाऊँगा, दादा घुड़केंगे।

केदार—वह तो अब अलग हो गए।

लक्षमन—तो अब हमको कोई मारेगा, तब भी दादा न बोलेंगे?

केदार—वाह, तब क्यों न बोलेंगे?

रग्घू ने तीनों लड़कों को दरवाजे पर खड़े देखा: पर कुछ बोला नहीं। पहले तो वह घर के बाहर निकलते ही उन्हें डाँट बैठता था: पर आज वह मूर्ति के समान निश्चल बैठा रहा। अब लड़कों को कुछ साहस हुआ। कुछ दूर और आगे बढ़े। रग्घू अब भी न बोला, कैसे बोले? वह सोच रहा था, काकी ने लड़कों को खिला-पिला दिया, मुझसे पूछा तक नहीं। क्या उसकी ऑखों पर भी परदा पड़ गया है: अगर मैंने लड़कों को पुकारा और वह न आयें तो? मैं उनकों मार-पीट तो न सकूँगा। लू में सब मारे-मारे फिरेंगे। कहीं बीमार न पड़ जाएँ। उसका दिल मसोसकर रह जाता था, लेकिन मुँह से कुछ कह न सकता था। लड़कों ने देखा कि यह बिलकुल नहीं बोलते, तो निर्भय होकर चल पड़े।

सहसा मुलिया ने आकर कहा—अब तो उठोगे कि अब भी नहीं? जिनके नाम पर फाका कर रहे हो, उन्होंने मजे से लड़कों को खिलाया और आप खाया, अब आराम से सो रही है। 'मोर पिया बात न पूछें, मोर सुहागिन नाँव।' एक बार भी तो मुँह से न फूटा कि चलो भइया, खा लो।

रग्घू को इस समय मर्मान्तक पीड़ा हो रह थी। मुलिया के इन कठोर शब्दों ने घाव पर नमक छिड़क दिया। दु:खित नेत्रों से देखकर बोला—तेरी जो मर्जी थी, वही तो हुआ। अब जा, ढोल बजा!

मुलिया—नहीं, तुम्हारे लिए थाली परोसे बैठी है।

रग्घू—मुझे चिढ़ा मत। तेरे पीछे मैं भी बदनाम हो रहा हूँ।

जब तू किसी की होकर नहीं रहना चाहती, तो दूसरे को क्या गरज है, जो मेरी खुशामद करे? जाकर काकी से पूछ, लड़के आम चुनने गए हैं, उन्हें पकड़ लाऊँ?

मुलिया अँगूठा दिखाकर बोली—यह जाता है। तुम्हें सौ बार गरज हो, जाकर पूछो।

इतने में पन्ना भी भीतर से निकल आयी। रग्घू ने पूछा—लड़के बगीचे में चले गए काकी, लू चल रही है।

पन्ना—अब उनका कौन पुछत्तर है? बगीचे में जाएँ, पेड़ पर चढ़ें, पानी में डूबें। मैं अकेली क्या-क्या करुँ?

रग्घू—जाकर पकड़ लाऊँ?

पन्ना—जब तुम्हें अपने मन से नहीं जाना है, तो फिर मैं जाने को क्यों कहूँ? तुम्हें रोकना होता, तो रोक न देते? तुम्हारे सामने ही तो गए होंगे?

पन्ना की बात पूरी भी न हुई थी कि रग्घू ने नारियल कोने में रख दिया और बाग की तरफ चला।

रग्घू लड़कों को लेकर बाग से लौटा, तो देखा मुलिया अभी तक झोंपड़े में खड़ी है। बोला—तू जाकर खा क्यों नहीं लेती? मुझे तो इस बेला भूख नहीं है।

मुलिया ऐंठकर बोली—हाँ, भूख क्यों लगेगी! भाइयों ने खाया, वह तुम्हारे पेट में पहुँच ही गया होगा।

रग्घू ने दाँत पीसकर कहा—मुझे जला मत मुलिया, नहीं अच्छा न होगा। खाना कहीं भागा नहीं जाता। एक बेला न खाऊँगा, तो मर न जाउँगा! क्या तू समझती हैं, घर में आज कोई बात हो गई हैं? तूने घर में चूल्हा नहीं जलाया, मेरे कलेजे में आग लगाई है। मुझे घमंड था कि और चाहे कुछ हो जाए, पर मेरे घर में फूट का रोग न आने पाएगा, पर तूने घमंड चूर कर दिया। परालब्ध की बात है।

मुलिया तिनककर बोली—सारा मोह-छोह तुम्हीं को है कि और किसी को है? मैं तो किसी को तुम्हारी तरह बिसूरते नहीं देखती।

रग्घू ने ठंडी साँस खींचकर कहा—मुलिया, घाव पर नोन न छिड़क। तेरे ही कारन मेरी पीठ में धूल लग रही है। मुझे इस गृहस्थी का मोह न होगा, तो किसे होगा? मैंने ही तो इसे मर-मर जोड़ा। जिनको गोद में खेलाया, वहीं अब मेरे पट्टीदार होंगे। जिन बच्चों को मैं डाँटता था, उन्हें आज कड़ी आँखों से भी नहीं देख सकता। मैं उनके भले के लिए भी कोई बात करुँ, तो दुनिया यही कहेगी कि यह अपने भाइयों को लूटे लेता है। जा मुझे छोड़ दे, अभी मुझसे कुछ न खाया जाएगा।

मुलिया—मैं कसम रखा दूँगी, नहीं चुपके से चले चलो।

रग्घू—देख, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। अपना हठ छोड़ दे।

मुलिया—हमारा ही लहू पिए, जो खाने न उठे।

रग्घू ने कानों पर हाथ रखकर कहा—यह तूने क्या किया मुलिया? मैं तो उठ ही रहा था। चल खा लूँ। नहाने-धोने कौन जाए, लेकिन इतनी कहे देता हूँ कि चाहे चार की जगह छः रोटियाँ खा जाऊँ, चाहे तू मुझे घी के मटके ही में डुबा दे: पर यह दाग मेरे दिल से न मिटेगा।

मुलिया—दाग-साग सब मिट जाएगा। पहले सबको ऐसा ही लगता है। देखते नहीं हो, उधर कैसी चैन की वंशी बज रही है, वह तो मना ही रही थीं कि किसी तरह यह सब अलग हो जाएँ। अब वह पहले की-सी चाँदी तो नहीं है कि जो कुछ घर में आवे, सब गायब! अब क्यों हमारे साथ रहने लगीं?

रग्घू ने आहत स्वर में कहा—इसी बात का तो मुझे गम है। काकी ने मुझे ऐसी आशा न थी।

रग्घू खाने बैठा, तो कौर विष के घूँट-सा लगता था। जान पड़ता था, रोटियाँ भूसी की हैं। दाल पानी-सी लगती। पानी कंठ के नीचे न उतरता था, दूध की तरफ देखा तक नहीं। दो-चार ग्रास खाकर उठ आया, जैसे किसी प्रियजन के श्राद्ध का भोजन हो।

रात का भोजन भी उसने इसी तरह किया। भोजन क्या किया, कसम पूरी की। रात-भर उसका चित्त उद्विग्न रहा। एक अज्ञात शंका उसके मन पर छाई हुई थी, जेसे भोला महतो द्वार पर बैठा रो रहा हो। वह कई बार चौंककर उठा। ऐसा जान पड़ा, भोला उसकी ओर तिरस्कार की आँखों से देख रहा है।

वह दोनों जून भोजन करता था: पर जैसे शत्रु के घर। भोला की शोकमग्न मूर्ति आँखों से न उतरती थी। रात को उसे नींद न आती। वह गाँव में निकलता, तो इस तरह मुँह चुराए, सिर झुकाए मानो गौ-हत्या की हो।

पाँच साल गुजर गए। रग्घू अब दो लड़कों का बाप था। आँगन में दीवार खिंच गई थी, खेतों में मेड़ें डाल दी गई थीं और बैल-बछिए बाँध लिये गए थे। केदार की उम्र अब उन्नीस की हो गई थी। उसने पढ़ना छोड़ दिया था और खेती का काम करता था। खुन्नू गाय चराता था। केवल लछमन अब तक मदरसे जाता था। पन्ना और मुलिया दोनों एक-दूसरे की सूरत से जलती थीं। मुलिया के दोनों लड़के बहुधा पन्ना ही के पास रहते। वहीं उन्हें उबटन मलती, वही काजल लगाती, वही गोद में लिये फिरती: मगर मुलिया के मुंह से अनुग्रह का एक शब्द भी न निकलता। न पन्ना ही इसकी इच्छुक थी। वह जो कुछ करती निर्व्याज भाव से करती थी। उसके दो-दो लड़के अब कमाऊ हो गए थे। लड़की खाना पका लेती थी। वह खुद ऊपर का काम-काज कर लेती। इसके विरुद्ध रग्घू अपने घर का अकेला था, वह भी दुर्बल, अशक्त और जवानी में बूढ़ा। अभी आयु तीस वर्ष से अधिक न थी, लेकिन बाल खिचड़ी हो गए थे। कमर भी झुक चली थी। खाँसी ने जीर्ण कर रखा था। देखकर दया आती थी। और खेती पसीने की वस्तु है। खेती की जैसी सेवा होनी चाहिए, वह उससे न हो पाती। फिर अच्छी फसल कहाँ से आती? कुछ ऋण भी हो गया था। वह चिंता और भी मारे डालती थी।

चाहिए तो यह था कि अब उसे कुछ आराम मिलता। इतने दिनों के निरन्तर परिश्रम के बाद सिर का बोझ कुछ हल्का होता, लेकिन मुलिया की स्वार्थपरता और अदूरदर्शिता ने लहराती हुई खेती उजाड़ दी। अगर सब एक साथ रहते, तो वह अब तक पेन्शन पा जाता, मजे में द्वार पर बैठा हुआ नारियल पीता। भाई काम करते, वह सलाह देता। महतो बना फिरता। कहीं किसी के झगड़े चुकाता, कहीं साधु-संतों की सेवा करता: वह अवसर हाथ से निकल गया। अब तो चिंता-भार दिन-दिन बढ़ता जाता था। (जारी ...)

मुंशी प्रेमचंद (31 जुलाई, 1880 - 8 अक्टूबर, 1936) भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, ज़िम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएँ नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। प्रेमचन्द महान साहित्यकार के साथ-साथ एक महान दार्शनिक भी थे। गोदान, ग़बन, कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। साभार: *http://premchand.kahaani.org*, चित्र: http://www.munsipremchand.iitk.ac.in

जीवन श्रृंगार

परैतु मृत्युरमृतं न एतु -अथर्व

हम अमृत प्राप्त करें, मृत्यु हमसे दूर रहे।

ज्ञान ही अमृत और अज्ञान ही मृत्यु हैं।

****

मनुज की देह मुक्ति का द्वार,मिलेगी क्या यह बारम्बार !

भूलता क्यों तू अपना रूप-बिछुड़कर जग में आ अनजान।

नहीं क्या करता लघु-सा बीज-विटप-वट का विशाल निर्माण॥

सत्य ही इस जीवन का सार, शेष सब क्षणभंगुर निःसार !

स्वार्थ से पूरित जग का स्नेह-मोह है बन्धन मधुर अनूप।

किया करती माया पथ भ्रष्ट-दिखाकर

अपना रम्य स्वरूप-आत्म-बल का करके विस्तार,

सहज ही हो भवसागर पार !

गहन तम, अन्तर का कर दूर-ज्योति बन हो जा उसमें लीन।

मिटाकर सरिताएँ अस्तित्व-जलधि में हो जाती ज्यों लीन॥

काल का चलता चक्र निहार,चेत कर जीवन का श्रृंगार !

-रामस्वरूप स्तरे साहित्यरत्न

साभार: अखण्ड ज्योति, पं. आचार्य श्रीराम शर्मा आचार्य, अंक 6, जून 1961

मेघदूत

पूर्वमेघ

धूमज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।

धुएँ, पानी, धूप और हवा का जमघट बादल कहाँ? कहाँ सन्देश की वे बातें जिन्हें चोखी इन्द्रियोंवाले प्राणी ही पहुँचा पाते हैं? उत्कंठावश इस पर ध्यान न देते हुए यक्ष ने मेघ से ही याचना की। जो काम के सताए हुए हैं, वे जैसे चेतन के समीप वैसे ही अचेतन के समीप भी, स्वभाव से दीन हो जाते हैं।

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतो हं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।।

पुष्कर और आवर्तक नामवाले मेघों के लोक-प्रसिद्ध वंश में तुम जनमे हो। तुम्हें मैं इन्द्र का कामरूपी मुख्य अधिकारी जानता हूँ। विधिवश, अपनी प्रिय से दूर पड़ा हुआ मैं इसी कारण तुम्हारे पास याचक बना हूँ। गुणीजन से याचना करना अच्छा है, चाहे वह निष्फल ही रहे। अधम से माँगना अच्छा नहीं, चाहे सफल भी हो।

संतप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद! प्रियायाः
संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या ।।

जो सन्तप्त हैं, है मेघ! तुम उनके रक्षक हो। इसलिए कुबेर के क्रोधवश विरही बने हुए मेरे सन्देश को प्रिया के पास पहुँचाओ। यक्षपतियों की अलका नामक प्रसिद्ध पुरी में तुम्हें जाना है, जहाँ बाहरी उद्यान में बैठे हुए शिव के मस्तक से छिटकती हुई चाँदनी उसके भवनों को धवलित करती है।

(जारी ...)

कालिदास संस्कृत भाषा के सबसे महान कवि और नाटककार थे। कालिदास शिव के भक्त थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं की। कलिदास अपनी अलंकार युक्त सुंदर सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। उनके ऋतु वर्णन अद्वितीय हैं और उनकी उपमाएं बेमिसाल। संगीत उनके साहित्य का प्रमुख अंग है और रस का सृजन करने में उनकी कोई उपमा नहीं। उन्होंने अपने शृंगार रस प्रधान साहित्य में भी साहित्यिक सौन्दर्य के साथ-साथ आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। कालिदास की प्रमुख रचनाओं में शामिल हैं -: अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मेघदूत, विक्रमोवशीर्यम्, मालविकाग्निमित्रम्, कुमारसंभवम्, ऋतुसंहार। साभार: www.hindisamay.com

दो दो बार बुकर एवार्ड के विजेता - पीटर केरी

कभी न कभी मेरी तरह आपके मन में भी विचार आया होगा कि भारत से बाहर के उपन्यासकारों की कृतियां कैसी होती हैं? वे किस तरह के चरित्र का निर्माण अपनी रचनाओं में करते हैं और उनके विषय क्या होते हैं? किसी छोटे मोटे लेखक की रचनायें पढ़ने के बदले हम क्यों न किसी ऐसे लेखक की रचनायें देखें जिसे दो दो बार बुकर एवार्ड मिला हो? वैसे भी विश्व में ऐसे कितने लेखक हैं? केवल दो। ऑस्ट्रेलिया में जन्मे लेखक पीटर केरी इनमें से एक हैं। १९८८ में 'ओस्कार एन्ड ल्यूसिन्डा' के लिये और २००१ में 'ट्रयू स्टोरी ऑफ़ केली गेंग' के लिये इन्हें यह एवार्ड मिला । पीटर ने कुल ११ उपन्यास लिखे हैं । कुछ लघु उपन्यास और कहानी संग्रह भी लिखे हैं । इनके लेखन की गुणवत्ता से तीसरी बार भी बुकर के लिये नामांकन हो गया तो इस बार भी उन्हे सांत्वना पुरस्कार तो मिल ही गया। आज हम उनके साहित्य पर द्रष्टिपात करेंगे।

साहित्य समाज का दर्पण है या नेगेटीव? और इसका उत्तर यही है कि कभी-कभी सत्य कल्पना की सीमा को पार कर जाता है। वस्तुत: इस उपन्यास में एक सत्य-कथा से आधार लेकर ही कल्पना के ताने-बाने में बुना गया है और ऐसा स्वयं पीटर ने ही घोषित किया है।

"माई लाइफ़ एज़ ए फ़ेक" साहित्य और धोखाघड़ी इन दोनो के बीच तनावपूर्ण रिश्तों के आस पास गुंथी हुई नैतिक भूलभुलैया की कहानी है। लंदन पोयेट्री पत्रिका की महिला-संपादक एक क्रिस्टोफ़र नाम के रहस्यमय ओज़ी(ऑस्ट्रेलियावासी) से मिलती है। क्रिस्टोफ़र एक तिरस्कृत किस्म का साहित्यिक-छलिया और शरारती है जो धोखेबाजी, अपरिष्कृत शक्ति और कामुक- मुँहफटपन में लिपटी हुई पांडुलिपि से अपना काम करता है। किन्तु महिला-संपादक इस संदिग्ध पांडुलिपि में भी एक बहुत प्रतिभाशाली कार्य को पहचान लेती है। जैसे जैसे महिला-संपादक इस पांडुलिपि को पाने की कौशीश करती है क्रिस्टोफ़र उसे हत्या, पाखंड, अपहरण और देशनिकाले की कहानी में घसीटता है। कोरी कल्पना के ताने बाने में बुना एक कवि-पात्र बोब अपने ही रचयिता की सुविधानुसार २४ वर्ष की उम्र में मर जाता है। प्रकाशन होने पर संपादक पर अश्लीलता का मुकदमा चलता है। सुनवाई के समय काल्पनिक पात्र बोब जो कि उसके मनगढ़न्त चित्र से मिलता जुलता भी है, आ जाता है। क्रिस्टोफ़र अपने ही रचे द्वेषपूर्ण पात्र से रूबरू हो कर हक्का-बक्का रह जाता है।

उपन्यास में पीटर ने शरारत और पश्चाताप से भरपूर एक ऐसे चरित्र की खोज की है जिसका अपना ही काल्पनिक-कवि भूत की तरह पीछा नहीं छोड़ता। यह ऐसे खब्ती और सनकी की कहानी है जिसमें जालसाजी सत्यता की चरम सीमा पर पहुँचती है और सत्य जालसाजी की मर्यादा लाँघ जाता है। अज़ीब बात यह है कि यदि कहानीकार पागल हो उसी शर्त पर यह कहानी सच हो सकती है अन्यथा नहीं। तो क्या? ऐसी दुस्साहसपूर्ण किन्तु मनोरंजक कृति का किन शब्दों में वर्णन किया जाय।

कुछ पाठकों को यह शंका हो सकती है कि ऐसे महान साहित्यकार इतने काल्पनिक चरित्र के आधार पर क्यों

लिखते हैं? साहित्य समाज का दर्पण है या नेगेटीव? और इसका उत्तर यही है कि कभी-कभी सत्य कल्पना की सीमा को पार कर जाता है। वस्तुत: इस उपन्यास में एक सत्य-कथा से आधार लेकर ही कल्पना के ताने-बाने में बुना गया है और ऐसा स्वयं पीटर ने ही घोषित किया है।

"दी फेट मेन इन हिस्ट्री" अतियथार्थवादी कहानियों का संग्रह है। यह कहानियाँ कुछ सवाल उठाती हैं – यदि लोटरी के द्वारा नये शरीर का चयन संभव होता तो कितने लोग जानबूझ कर विद्रुपता या भद्देपन को पसंद करते? यदि किसी साम्यवादी टाइप समाज में मोटापे को क्रान्तिविरोधी माना जाय तो कितने लोग इसके विरोध में आक्रामक रूख धरेंगे? यदि कुछ बंदूकधारी लुटेरे कोई व्यापार अपने कब्जे में कर लें और आतंक के द्वारा व्यापार का संचालन करना चाहें तो यह पद्दति उन्हे किस सीमा पर ले जायगी? यह प्रश्न पीटर ने इन कहानियों में ढूंढे हैं और इनमें हमारे काले और उजले व्यक्तित्व की डरावनी सच्चाइयों से परिचित कराते हैं।

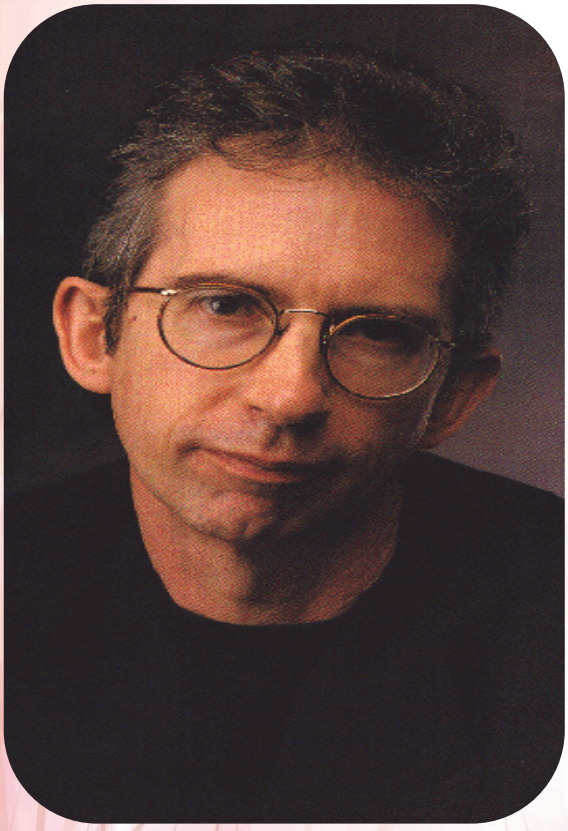

'हिज़ इल्लिगल सेल्फ़" वियतनाम युद्ध के प्रकोप की दिल दहलाने वाली कहानी है - 'कोई हो मेरा अपना' और 'स्वतन्त्रता का सपना' इन दो विरोधी इच्छाओं के बीच झूलती हुई। इसके विरूद्ध "थेफ़्ट" एक प्रेम-कहानी है जो शुरू ही तब होती है जब एक चित्रकार का ८ साल का बेटा चल बसता है और साथ ही सीडनी का वह स्टूडियो गवाँ बैठता है जिसमें कभी चित्रकार के रूप में उसने ख़्याति प्राप्त की थी। यह एक लापरवाह हास्य से आवेशित उपन्यास है जो बुचर बोन्स और उसके मूर्ख-विद्वान भाई हग के शब्दों में वर्णित किया गया है। यह एक अनपेक्षित किस्म की प्रेम-कविता की तरह है जो कला, धोखाघड़ी, उत्तरदायित्व और मुक्ति के विचारो पर छानबीन करती है। इसकी गूढ़ और विचारोत्तेजक कहानी पाठकों को अच्छी तरह हँसा भी सकती है।

"अमेरिकन ड्रीम्स" छोटे से गाँव के भोले भाले लोगों की कहानी है जो दिन-रात अमेरीका का सपना लिये जीते हैं। मि. ग्लिबसन उस गाँव के पास एक चोंटी के चारों ओर बाड़ लगा कर भीतर कुछ करता है। "हम सब के सब याने आठ सौ लोग मि. गिब्सन जो हम लोगों के बीच में रहा था उसके छोटे से अतिक्रमण को याद करने के लिये आये हैं।" एक लड़का अपनी याददाश्त को कुरेदते हुये कहता है कि किसी ने मि. गिब्सन को ठेंस पहुँचाई है; पता नहीं डायर कसाई ने या जिन लोगों ने सेव चुरा लिये थे उन्होने...पर कोई तो था। इस बीच वह कस्बा काफी आधुनिक हो जाता है। कहानी का मुख्य पात्र वहाँ पेट्रोल स्टेशन पर काम करता है और उस दिवाल की ओर घुरता रहता है।... एक रोज मि. ग्लिबसन मर जाता है और उसकी दिवाल गिराने का समय आ जाता है। दिवाल के भीतर क्या चलता है इसकी जिज्ञासा अन्त तक रहती है।

"ओस्कार एन्ड ल्युसिन्डा" में एक जवान अंगरेज़ पादरी की कहानी है जो अपने भूतकाल से नाता तोड़ कर जुये की बुरी लत पाल लेता है। एक देहाती लड़की ल्युसिन्डा आत्मनिर्भर होने का व मन में औद्योगिक आदर्श बना कर सीडनी आती है तो दोनो मिलकर ऑस्ट्रेलिया में उन्नीसवी शताब्दी के पांचवे दशक का सा नजारा बनाते है। इस काल्पनिक कथा से हट कर एक सत्यकथा पर आधारित उपन्यास है (द्रष्टव्य है इन दोनो पुस्तकों को बुकर एवार्ड मिला है) - "दी ट्रयू स्टोरी ऑफ़ केली गेंग" जिसमें विख्यात (या कुख्यात) डाकू नेड केली स्वयं बोलता है। पुलिस से भागते समय सस्ते कागज पर और देहाती भाषा में याने कुछ गलत सलत किन्तु जादूभरे वर्णन से लिखी हुई यह कहानी है। इस उपन्यास के द्वारा पीटर ने एक असाधारण पीड़ित की अन्यायपूर्ण छवि पर एक कुशल चित्रकार की भाँति मरम्मत की है। पीटर जैसे महान लेखक अपनी संवेदनशीलता के रंगो से कुशलतापूर्वक शब्द-चित्र तैयार करते हैं। उनके अपने शब्दों में "लेखन खाई के उपर किसी चट्टान के किनारे पर खड़े होने के समान है और यह विशेषतया सही है जब आप पहला मसौदा तैयार कर रहे हैं फिर हर रोज आप अपने लिये नई जमीन बनाते हैं जिस पर कि आप खड़े होते हैं।"

-हरिहर झा, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र(BARC) के कम्प्यूटर-विभाग में वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर कार्य करने के पश्चात में मेलबर्न के मौसम-विभाग में वरिष्ठ सूचना–तकनीकी अधिकारी के पद पर कार्यरत । बोलोजी.कॉम अँगरेजी वेब-पत्रिका पर 'सप्ताह के कवि' के रूप में सम्मान । मेलबर्न में द्वैमासिक "साहित्य-संध्या" का नियमित आयोजन । हिन्दी-टंकण का प्रचार व प्रशिक्षण । ऑस्ट्रेलिया व भारत में रेडियो चैनल पर वार्ता व कविता पाठ । सरिता के अलावा लेखनी, वेबदुनिया, हिन्दी-चेतना(केनेडा) तथा अन्य वेब पत्रिकाओं में प्रकाशित: साहित्य-कुंज । अनुभूति । कृत्या । हिन्द-युग्म । स्वर्ग-विभा । हास्य, आखर कलश । काव्यालय । परिकल्पना । सृजनगाथा**,** "अंग अंग में अनंग", "मृत्युंजय" , "बूमरैंग – ऑस्ट्रेलिया से कवितायें", "गुलदस्ता"(भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया), 'हिडन ट्रेज़र" (मेलबोर्न कवि एसोसिएशन) एवं "बाउन्डरीज़ ऑफ़ दी हार्ट"(गैलेक्क्षी प्रकाशन)

अनमोल वचन—चाणक्य

- मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता और जागते रहने से भय नहीं होता।
- आँख के अंधे को दुनिया नहीं दिखती, काम के अंधे को विवेक नहीं दिखता, मद के अंधे को अपने से श्रेष्ठ नहीं दिखता और स्वार्थी को कहीं भी दोष नहीं दिखता।
- प्रलय होने पर समुद्र भी अपनी मर्यादा को छोड़ देते हैं लेकिन सज्जन लोग महाविपत्ति में भी मर्यादा को नहीं छोड़ते।

तिकड़ियां

अर्जुन सा शिष्य हो,
गुरु हो द्रोण जैसा
तो रोक कौन सकता है विजयश्री से उसे ?
एकलव्य?
उसकी तो कर दी द्रोण ने
ऐसी कि तैसी!
*****

रखता हूँ सिरहाने पर दो-तीन किताबें
दो-चार पन्ने पढ़ कर सो जाने के लिए
एक-दो ताज़ा प्रीत रखता हूँ
मन में - जीने के लिये ।
*****

मुझे नहीं मालूम कौन सी है वो बात
जिसको सुनने से भी डरता है मन
जो डुबोये रखता है
उसे शोर में हरदम।
*****

पड़ गयी है आदत अब ग़म उठाने की
बेचैन बहुत हूँ, परेशान हूँ मैं मगर -
कोई नया ग़म ही नहीं आजकल ।
*****

घड़ी-घड़ी घड़ी देखने से कट नहीं जाता वक्त
पल पल गिनते रहने से आ नहीं जाती नींद
सिर्फ चाहते रहने से मिल नहीं जाते मनमीत।
*****

लिखते हैं क्यूँ लोग लम्बी-लम्बी कहानियाँ
छोटे-छोटे नाटक, बड़े-बड़े उपन्यास -
एक छोटी सी कविता ही कह जाती है सब कुछ।

*****

ये बिखरे बिखरे ख़याल, प्रेमभाई
ये बेढंगे बेतुके बेमानी शब्दजाल
लगता है ठिकाने नहीं दिमाग़ आजकल।

- प्रेम माथुर

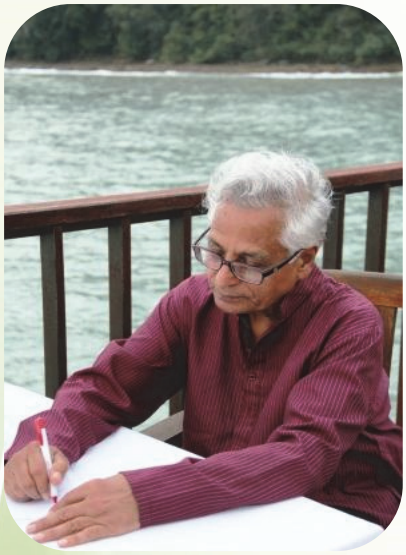

प्रेम माथुर, 73वें साल में 'बूमेरंग' में कवितायेँ प्रकाशित! 75 वर्ष की आयु में पहली कहानी प्रकाशित!! और अंग्रेजी भाषा शिक्षण के विशेषज्ञ रहे 45 साल तक!!!

पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के हिंदी समाज भूतपूर्व अध्यक्ष, अब लेखन के अलावा पर्थ के सीनियर सिटीजंस (वरिष्ठ नागरिकों की) रविवारीय गोष्ठी 'संस्कृति' में गीत-संगीत-साहित्य से मन बहलाते हैं.

अनमोल वचन— भगवान महावीर

- जिस प्रकार बिना जल के धान नहीं उगता उसी प्रकार बिना विनय के प्राप्त की गई विद्या फलदायी नहीं होती।
- भोग में रोग का, उच्च-कुल में पतन का, धन में राजा का, मान में अपमान का, बल में शत्रु का, रूप में बुढ़ापे का और शास्त्र में विवाद का डर है। भय रहित तो केवल वैराग्य ही है।
- पीड़ा से दृष्टि मिलती है, इसलिए आत्मपीड़न ही आत्मदर्शन का माध्यम है।

पिया मिलन

मैं नव नवेली छैल छबीली
पिया मिलन को जाऊँ
गगरिया ले के बिंदिया लगा के
मैं ठुमक-ठुमक इतराऊँ

नयनों में काला कजरा लगा के
चमेली की वेणी बनाऊँ
चुटिया में फूलों की वेणी लगा के
नाचूँ और मैं गाऊँ

तेरे श्याम वर्ण पे मोहित होकर
मेरी सखियाँ मुझे चिढ़ायें
छोटा सा घूँघट काढ़ के
निगोड़ी पेड़ पीछे छिप जायें

छिप-छिप के वे देखें मुझको
और हीं-हीं हँसी उड़ायें
ज़ोर-ज़ोर से ताली बजा के
सारे गाँव को सिर पे उठायें

जीना दूभर हो गया मेरा
कुछ तो करो उपाय
छम-छम कर मेरी पायल झनके
मोहे मन को चैन ना आये ।।

-सुमन

मेलबोर्न से संबंधित सुमन हिंदी और अंग्रेजी में कविताएँ व लघु कथाएँ लिखतीं हैं। सुगंध सुमन, कवितांजली उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं।

मीरां बाई पदावली

शबरी प्रसंग

अब तौ हरी नाम लौ लागी।
सब जगको यह माखनचोरा, नाम धर्‌यो बैरागीं॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी।
मूड़ मुड़ाइ डोरि कटि बांधी, माथे मोहन टोपी॥
मात जसोमति माखन-कारन, बांधे जाके पांव।
स्यामकिसोर भयो नव गौरा, चैतन्य जाको नांव॥
पीतांबर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै।
गौर कृष्ण की दासी मीरां, रसना कृष्ण बसै॥

विषमता की खाई

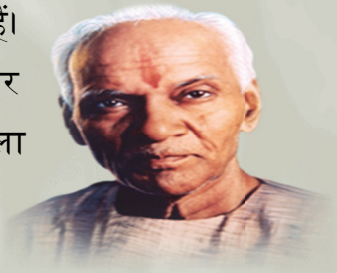

विज्ञान की कृपा से अनेकानेक यंत्र निर्मित हुए हैं जो थोड़े समय में प्रचुर उत्पादन करते हैं। सौ आदमियों का काम सम्हालने वाली एक मशीन बाकी निन्यानवे व्यक्तियों को बेकार बनाती है और उन निन्यानवे व्यक्तियों द्वारा संभावित उपार्जन भी एक मालिक के पास चला जाता है।

मशीनों और यंत्रों से थोड़े समय में अधिक उत्पादन होता है यह ठीक है पर यह भी सही है कि अधिक व्यक्तियों द्वारा हो सकने वाला उपार्जन थोड़े व्यक्तियों के पास चला जाता है। परिणाम यह होता है कि कुछ लोग जो मालदार और धन संपन्न होते हैं, मशीनें लगा सकते हैं, उद्योग-धंधे और कल कारखाने खोल सकते हैं, दिनों दिन और अधिक संपन्न होते जाते हैं तथा जिनके पास थोड़े साधन होते हैं, वे और अधिक साधनहीन होते जाते हैं। यह व्यवस्था विषमता की खाई को ही बढ़ाती है।

यह भी स्वाभाविक ही होगा कि जो लोग निर्धन और साधनहीन होते जाते हैं उन्हें धनवानों और साधन संपन्नों से ईर्ष्या होगी। परिणामस्वरूप समाज में कलह का वातावरण बनता है। समृद्धि को ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मान लेना अंततः अनीति, अमंगल, अव्यवस्था और कलह को ही जन्म देना है। इसलिए आवश्यक है कि साधन वृद्धि की आवश्यकता को एक निश्चित स्तर तक ही सीमित रखा जाए।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, बड़े आदमी नहीं महामानव बनें , पृ. २९”

ग़ज़ल

दर्द जब आता है सहलाने मेरे सीने को
उन दिनों जी भी बहुत चाहता है जीने को

कुछ तशफीह[1] तो मेरी प्यास की हो सकती है
सब्र का घूँट ही इक आध मिले पीने को

मैंने कुछ और तो माँगा नहीं तुझसे या रब
हाँ मगर यह कि मेरा जी तो करे जीने को

अपने दिल में तो कोई ख़ाली जगह थी ही नहीं
हमनें रखना था कहाँ बुगज़[2] को या कीने[3] को

जाने क्या दिल पे मुस्सलत[4] किये रखा हमने
एहमियत[5] हमने कभी दी ही नहीं जीने को

अब मसीहा का भी लेना नहीं एहसान मुझे
यादें आ जातीं हैं सहलाने मेरे सीने को

प्यास तो अपनी बुझाना ही पड़ेगी राहत
हमको अमृत न मिले जहर तो है पीने को

1. तसल्ली 2. नफरत 3. बदला लेने की इच्छा 4. चिपकाये रखना 5. महत्व

सिडनी वासी विख्यात उर्दू कवि ओम कृष्ण राहत ने केवल 13 साल की उम्र में उर्दू कविता का पहला संकलन प्रकाशित किया गया था। वह उर्दू, हिन्दी और पंजाबी में कविता, लघु कहानी और नाटक लिखते हैं। राजेंद्र सिंह बेदी, ख्वाजा अहमद अब्बास पुरस्कार और ऑस्ट्रेलिया की उर्दू सोसायटी निशान-ए-उर्दू के अलावा उन्हें उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब और पश्चिम बंगाल की उर्दू अकादमियों द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। उपरोक्त कृति, *ताजमहल*, कवि ओम कृष्ण राहत द्वारा सन 2007 में पर्काशित काव्य संग्रह, *दो कदम आगे*, में से संकलित की गयी है।

जो बीत गई सो बात गई

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अम्बर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई

जीवन में वह था एक कुसुम
थे उसपर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुवन की छाती को देखो
सूखी कितनी इसकी कलियाँ
मुर्झाई कितनी वल्लरियाँ
जो मुर्झाई फिर कहाँ खिली
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुवन शोर मचाता है
जो बीत गई सो बात गई

जीवन में मधु का प्याला था
तुमने तन मन दे डाला था
वह टूट गया तो टूट गया
मदिरालय का आँगन देखो
कितने प्याले हिल जाते हैं
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं
जो गिरते हैं कब उठतें हैं
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है
जो बीत गई सो बात गई

मृदु मिटटी के हैं बने हुए
मधु घट फूटा ही करते हैं
लघु जीवन लेकर आए हैं
प्याले टूटा ही करते हैं
फिर भी मदिरालय के अन्दर
मधु के घट हैं मधु प्याले हैं
जो मादकता के मारे हैं
वे मधु लूटा ही करते हैं
वह कच्चा पीने वाला है
जिसकी ममता घट प्यालों पर
जो सच्चे मधु से जला हुआ
कब रोता है चिल्लाता है
जो बीत गई सो बात गई

हरिवंश राय बच्चन (27 नवंबर, 1907 - 18 जनवरी, 2003) हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनकी कविताओं की लोकप्रियता का प्रधान कारण उसकी सहजता और संवेदनशील सरलता है। 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश' उनके प्रमुख संग्रह हैं। हरिवंश राय बच्चन को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', सरस्वती सम्मान एवं भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। साभार: कविता कोश, http://www.kavitakosh.org, चित्र: http://gadyakosh.org

संत कबीरदास दोहावली

अन्तर्यामी एक तुम, आत्मा के आधार।
जो तुम छोड़ो हाथ तो, कौन उतारे पार॥

मैं अपराधी जन्म का, नख-सिख भरा विकार।
तुम दाता दु:ख भंजना, मेंरी करो सम्हार॥

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा-परजा जेहि रुचें, शीश देई ले जाय॥

प्रेम प्याला जो पिये, शीश दक्षिणा देय।
लोभी शीश न दे सके, नाम प्रेम का लेय॥

सुमिरन में मन लाइए, जैसे नाद कुरंग।
कहैं कबीर बिसरे नहीं, प्रान तजे तेहि संग॥

सुमरित सुरत जगाय कर, मुख के कछु न बोल।
बाहर का पट बन्द कर, अन्दर का पट खोल॥

छीर रूप सतनाम है, नीर रूप व्यवहार।
हंस रूप कोई साधु है, सत का छाननहार॥

ज्यों तिल मांही तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा सांई तुझमें, बस जाग सके तो जाग॥

जा करण जग ढूँढ़िया, सो तो घट ही मांहि।
परदा दिया भरम का, ताते सूझे नाहिं॥

कबीर (1398-1518) कबीरदास, कबीर साहब एवं संत कबीर जैसे रूपों में प्रसिद्ध मध्यकालीन भारत के स्वाधीनचेता महापुरुष थे। इनका परिचय, प्राय: इनके जीवनकाल से ही, इन्हें सफल साधक, भक्त कवि, मतप्रवर्तक अथवा समाज सुधारक मानकर दिया जाता रहा है तथा इनके नाम पर कबीरपंथ नामक संप्रदाय भी प्रचलित है। संत कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। कबीरदास ने हिन्दू-मुसलमान का भेद मिटा कर हिन्दू-भक्तों तथा मुसलमान फ़कीरों का सत्संग किया। तीन भागों; रमैनी, सबद और साखी में विस्तृत कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है।

साभार: *www.hindisahityadarpan.in, http://www.kavitakosh.org,* चित्र : *www.hindu-blog.com*

तुलसी दास के दोहे

तुलसी अपने राम को, भजन करौ निरसंक
आदि अन्त निरबाहिवो जैसे नौ को अंक ।।

आवत ही हर्षे नही नैनन नही सनेह!
तुलसी तहां न जाइए कंचन बरसे मेह!!

तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहु ओर!
बसीकरण एक मंत्र है परिहरु बचन कठोर!!

बिना तेज के पुरूष अवशी अवज्ञा होय!
आगि बुझे ज्यों रख की आप छुवे सब कोय!!

तुलसी साथी विपत्ति के विद्या, विनय, विवेक!
साहस सुकृति सुसत्याव्रत राम भरोसे एक!!

काम क्रोध मद लोभ की जो लौ मन मैं खान!
तौ लौ पंडित मूरखों तुलसी एक समान!!

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार!
तुलसी भीतर बहारों जौ चाहसी उजियार!!

नाम राम को अंक है , सब साधन है सून!
अंक गए कछु हाथ नही, अंक रहे दस गून!!

प्रभु तरु पर, कपि डार पर ते, आपु समान!
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब सील निदान!!

तुलसी दास (1479–1586) ने हिन्दी भाषी जनता को सर्वाधिक प्रभावित किया। इनका ग्रंथ "रामचरित मानस" धर्मग्रंथ के रूप में मान्य है। तुलसी दास का साहित्य समाज के लिए आलोक स्तंभ का काम करता रहा है। इनकी कविताओं में साहित्य और आदर्श का सुन्दर समन्वय हुआ है। *साभार:* www.anubhuti-hindi.org, चित्र*: www.dlshq.org*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब से

आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव ॥

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखणि पाहि ॥

केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि ॥

ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥

नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥

Copyright 2010 Catnip studio Katherine [illegible]. All rights reserved

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥
सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

साभार: http://www.gurbanifiles.org/

दोहे - धरम के

शुद्ध धरम बस एक है, धारण कर ले कोय।
इस जीवन में फल मिले, आगे सुखिया होय।

सत्य धरम है विपस्सना, कुदरत का कानून।
जिस जिस ने धारण किया, करुणा बने जुनून।

अणु अणु ने धारण किया, विधि का परम विधान।
जो मानस धारण करे, हो जाये भगवान।

अंतस में अनुभव किया, जब जब जगा विकार।
कण - कण तन दूषित हुआ, दुख पाये विस्तार।

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख हो, भले इसाई जैन।
जब जब जगें विकार मन, कहीं न पाये चैन।

दुनियादारी में फंसा, दुख में लोट पलोट।
शुद्ध धरम पाया नही, नित नित लगती चोट।

मैं मैं की आशक्ति है, तृष्णा का आलाप।
धर्म नही धारण किया, करता रोज विलाप।

माया पीछे भागता, माया का अभिमान।
माया को सुख मानता, धन का करे न दान।

गंगा बहती धरम की, ले ले डुबकी कोय।
सच्चा धरम विपस्सना, जीवन सुखिया होय।

तप करते जोगी फिरें, जंगल, पर्वत घाट।
काया अंदर ढूंढ ले, तीन हाथ का हाट।

अपनी मूरत मन गढ़ी, सौ सौ कर श्रृंगार।
जब जब मूरत टूटती, आँसू रोये हजार।

पत्नी, माता, सुत, पिता, नहीं किसी से प्यार।
अपने जीवन में सभी, स्वार्थ पूर्ति सहकार।

आई. आई. आई. रूडकी (उत्तराँचल) से शिक्षित कवि कुलवंत सिंह काव्य, लेखन व हिंदी सेवाओं के लिए राजभाषा गौरव से सम्मानित किये जा चुके हैं। वे अनेक पत्रिकाएं व रचनाएँ पर्काशित कर चुके हैं। उनमे निम्नलिखित हैं—निकुंज, परमाणु व विकास, शहीद-ए-आजम भगत सिंह, चिरंतन व अन्य रचनाएँ। *कॉपी राईट:* कलवंत सिंह. विज्ञान प्रशन मंच

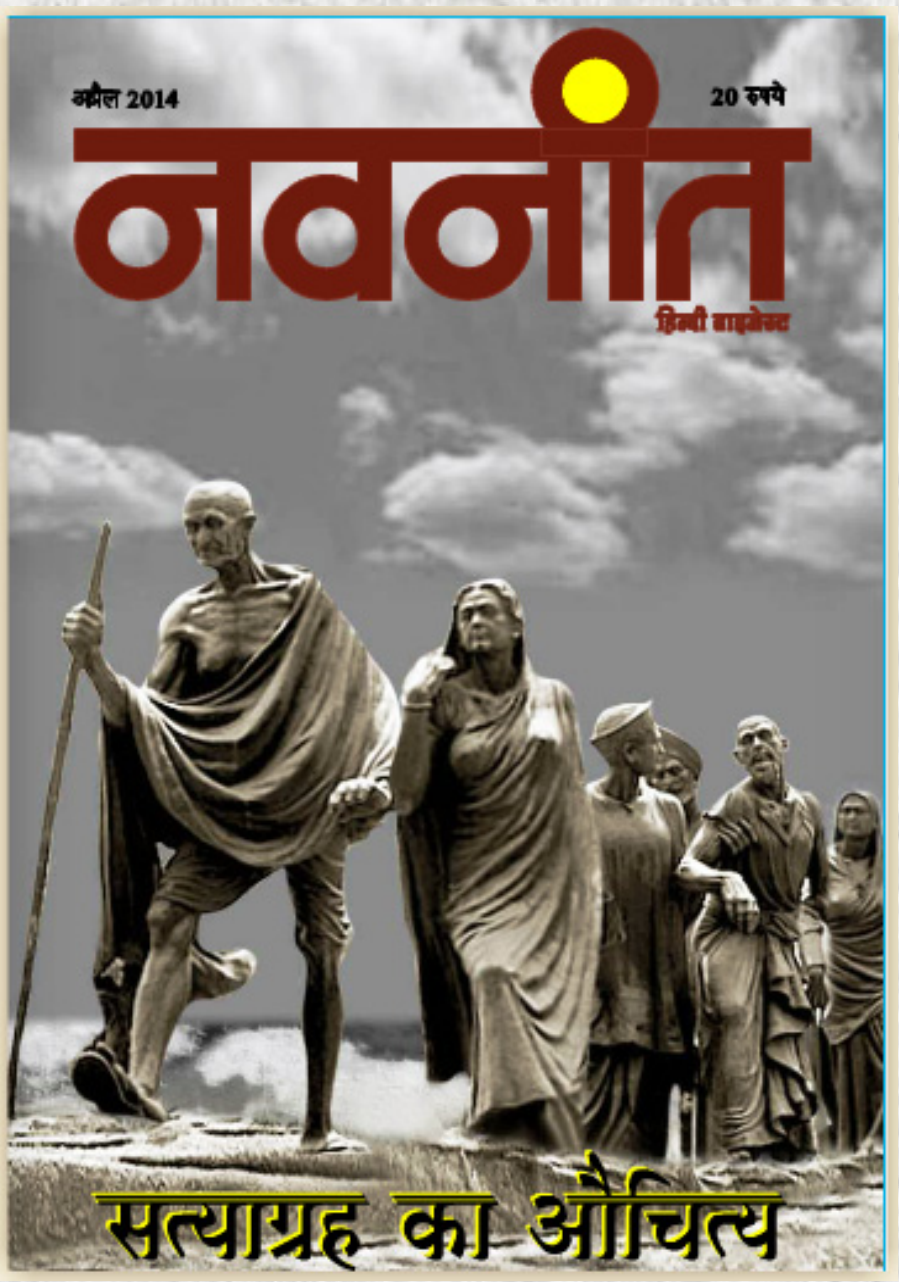

पी. वी. शंकरनकुट्टी द्वारा भारतीय विद्या भवन, के. एम्. मुंशी मार्ग, मुंबई – 400 007 के लिए पर्काशित

तथा सिद्धि प्रिंटर्स, 13/14, भाभा बिल्डिंग, खेतवाडी, 13 लेन, मुंबई – 400 004 में मुद्रित।

ले-आउट एवं डिज़ाइनिंग : समीर पारेख - क्रिएटिव पेज सेटर्स, गोरेगांव, मुंबई – 104, फ़ोन: 98690 08907

संपादक : विश्वनाथ सचदेव

नवनीत अब इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है। **www.navneet.bhavans.info** और साथ ही इन्टरनेट से नवनीत का चंदा भरने के लिए लॉगऑन करें

http://www.bhavans.info/periodical/pay_online.asp

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया

कक्ष 100, 515 केंट स्ट्रीट, सिडनी 2000, जीपीओ बॉक्स 4018, सिडनी 2001, फोन: 1300 242 826 (1300 भवन), फैक्स: 61 2 9267 9005,

ईमेल: **info@bhavanaustralia.org**

नवनीत समर्पण गुजराती में भी उपलब्ध

फैसला

उन दिनों हीरालाल और मैं अक्सर शाम को घूमने जाया करते थे। शहर की गलियाँ लाँघ कर हम शहर के बाहर खेतों की ओर निकल जाते थे। हीरालाल को बातें करने का शौक था और मुझे उसकी बातें सुनने का। वह बातें करता तो लगता जैसे जिंदगी बोल रही है। उसके किस्से-कहानियों का अपना फलसफाना रंग होता। लगता जो कुछ किताबों में पढ़ा है सब गलत है, व्यवहार की दुनिया का रास्ता ही दूसरा है। हीरालाल मुझसे उम्र में बहुत बड़ा तो नहीं है लेकिन उसने दुनिया देखी है, बड़ा अनुभवी और पैनी नजर का आदमी है।

उस रोज हम गलियाँ लाँघ चुके थे और बाग की लंबी दीवार को पार कर ही रहे थे जब हीरालाल को अपने परिचय का एक आदमी मिल गया। हीरालाल उससे बगलगीर हुआ, बड़े तपाक से उससे बतियाने लगा, मानों बहुत दिनों बाद मिल रहा हो।

फिर मुझे संबोधन करके बोला, 'आओ, मैं तुम्हारा परिचय कराऊँ... यह शुक्ला जी हैं...'

और गदगद आवाज में कहने लगा, 'इस शहर में चिराग ले कर भी ढूँढने जाओ तो इन-जैसा नेक आदमी तुम्हें नहीं मिलेगा?'

शुक्ला जी के चेहरे पर विनम्रतावश हल्की-सी लाली दौड़ गई। उन्होंने हाथ जोड़े और एक धीमी-सी झेंप-भरी मुस्कान उनके होंठों पर काँपने लगी।

'इतना नेकसीरत आदमी ढूँढे भी नहीं मिलेगा। जिस ईमानदारी से इन्होंने जिंदगी बिताई है मैं तुम्हें क्या बताऊँ। यह चाहते तो महल खड़े कर लेते, लाखों रुपया इकट्ठा कर लेते...'

शुक्ला जी और ज्यादा झेंपने लगे। तभी मेरी नजर उनके कपड़ों पर गई। उनका लिबास सचमुच बहुत सादा था, सस्ते से जूते, घर का धुला पाजामा, लंबा बंद गले का कोट और खिचड़ी मूँछें। मैं उन्हें हेड क्लर्क से ज्यादा का दर्जा नहीं दे सकता था।

'जितनी देर उन्होंने सरकारी नौकरी की, एक पैसे के रवादार नहीं हुए। अपना हाथ साफ रखा। हम दोनों एक साथ ही नौकरी करने लगे थे। यह पढ़ाई के फौरन ही बाद कंपटीशन में बैठे थे और कामयाब हो गए थे और जल्दी ही मजिस्ट्रेट बन कर फीरोजपुर में नियुक्त हुए थे। मैं भी उन दिनों वहीं पर था...'

मैं प्रभावित होने लगा। शुक्ला जी अभी लजाते हाथ जोड़े खड़े थे और अपनी तारीफ सुन कर सिकुड़ते जा रहे थे। इतनी-सी बात तो मुझे भी खटकी कि साधारण कुर्ता-पाजामा पहनने वाले लोग आम तौर पर मजिस्ट्रेट या जज नहीं होते। जज होता तो कोट-पतलून होती, दो-तीन अर्दली आसपास घूमते नजर आते। कुर्ता-पाजामा में भी कभी कोई न्यायाधीश हो सकता है?

'जितनी देर उन्होंने सरकारी नौकरी की, एक पैसे के रवादार नहीं हुए। अपना हाथ साफ रखा। हम दोनों एक साथ ही नौकरी करने लगे थे। यह पढ़ाई के फौरन ही बाद कंपटीशन में बैठे थे और कामयाब हो गए थे और जल्दी ही मजिस्ट्रेट बन कर फीरोजपुर में नियुक्त हुए थे।

इस झेंप-विनम्रता-प्रशंसा में ही यह बात रह गई कि शुक्ला जी अब कहाँ रहते हैं, क्या रिटायर हो गए हैं या अभी भी सरकारी नौकरी करते हैं और उनका कुशल-क्षेम पूछ कर हम लोग आगे बढ़ गए।

ईमानदार आदमी क्यों इतना ढीला-ढाला होता है, क्यों सकुचाता-झेंपता रहता है, यह बात कभी भी मेरी समझ में नहीं आई। शायद इसलिए कि यह दुनिया पैसे की है। जेब में पैसा हो तो आत्म-सम्मान की भावना भी आ जाती है, पर अगर जूते सस्ते हों और पाजामा घर का धुला हो तो दामन में ईमानदारी भरी रहने पर भी आदमी झेंपता-सकुचाता ही रहता है। शुक्ला जी ने धन कमाया होता, भले ही बेईमानी से कमाया होता, तो उनका चेहरा दमकता, हाथ में अँगूठी दमकती, कपड़े चमचम करते, जूते चमचमाते, बात करने के ढंग से ही रोब झलकता।

खैर, हम चल दिए। बाग की दीवार पीछे छूट गई। हमने पुल पार किया और शीघ्र ही प्रकृति के विशाल आँगन में पहुँच गए। सामने हरे-भरे खेत थे और दूर नीलिमा की झीनी चादर ओढ़े छोटी-छोटी पहाड़ियाँ खड़ी थीं। हमारी लंबी सैर शुरू हो गई थी।

इस महौल में हीरालाल की बातों में अपने आप ही दार्शनिकता की पुट आ जाती है। एक प्रकार की तटस्थता, कुछ-कुछ वैराग्य-सा, मानो प्रकृति की विराट पृष्ठभूमि के आगे मानव-जीवन के व्यवहार को देख रहा हो।

थोड़ी देर तक तो हम चुपचाप चलते रहे, फिर हीरालाल ने अपनी बाँह मेरी बाँह में डाल दी और धीमे से हँसने लगा।

'सरकारी नौकरी का उसूल ईमानदारी नहीं है, दफ्तर की फाइल है। सरकारी अफसर को दफ्तर की फाइल के मुताबिक चलना चाहिए।'

हीरालाल मानो अपने आप से बातें कर रहा था। वह कहता गया, 'इस बात की उसे फिक्र नहीं होनी चाहिए कि सच क्या है और झूठ क्या है, कौन क्या कहता है। बस, यह देखना चाहिए कि फाइल क्या कहती है।'

'यह तुम क्या कह रहे हो?' मुझे हीरालाल का तर्क बड़ा अटपटा लगा, 'हर सरकारी अफसर का फर्ज है कि वह सच की जाँच करे, फाइल में तो अंट-संट भी लिखा रह सकता है।'

'न, न, न, फाइल का सच ही उस के लिए एकमात्र सच है। उसी के अनुसार सरकारी अफसर को चलना चाहिए, न एक इंच इधर, न एक इंच उधर। उसे यह जानने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि सच क्या है और झूठ क्या है, यह उसका काम नहीं...'

'बेगुनाह आदमी बेशक पिसते रहें?'

हीरालाल ने मेरे सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। इसके विपरीत मुझे इन्हीं शुक्ला जी का किस्सा सुनाने लगा। शायद इन्हीं के बारे में सोचते हुए उसने यह टिप्पणी की थी।

'जब यह आदमी जज हो कर फीरोजपुर में आया, तो मैं वहीं पर रहता था। यह उसकी पहली नौकरी थी। यह आदमी सचमुच इतना नेक, इतना मेहनती, इतना ईमानदार था कि तुम्हें क्या बताऊँ। सारा वक्त इसे इस बात की चिंता लगी रहती थी कि इसके हाथ से किसी बेगुनाह को सजा न मिल जाए। फैसला सुनाने से पहले इससे भी पूछता, उससे भी पूछता कि असलियत क्या है, दोष किसका है, गुनहगार कौन है? मुलजिम तो मीठी नींद सो रहा होता और जज की नींद हराम हो जाती थी। ...अगर मैं भूल नहीं करता तो अपनी माँ को इसने वचन भी दिया था कि वह किसी बेगुनाह को सजा नहीं देगा। ऐसी ही कोई बात उसने मुझे सुनाई भी थी।

'छोटी उम्र में सभी लोग आदर्शवादी होते हैं। वह जमाना भी आदर्शवाद का था,' मैंने जोड़ा।

पर हीरालाल कहे जा रहा था, 'आधी-आधी रात तक यह मिस्लें पढ़ता और मेज से चिपटा रहता। उसे यही डर खाए जा रहा था कि उससे कहीं भूल न हो जाए। एक-एक केस को बड़े ध्यान से जाँचा करता था।'

फिर यों हाथ झटक कर और सिर टेढ़ा करके मानो इस दुनिया में सही क्या है और गलत क्या है, इसका अंदाज लगा पाना कभी संभव ही न हो, हीरालाल कहने लगा, 'उन्हीं दिनों फीरोजपुर के नजदीक एक कस्बे में एक वारदात हो गई और केस जिला कचहरी में आया। मामूली-सा केस था। कस्बे में रात के वक्त किसी राह-जाते मुसाफिर को पीट दिया गया था और उसकी टाँग तोड़ दी गई थी। पुलिस ने कुछ आदमी हिरासत में ले लिए थे और मुकदमा इन्हीं शुक्ला जी की कचहरी में पेश हुआ था। आज भी वह सारी घटना मेरी आँखों के सामने आ गई है... अब जिन लोगों को हिरासत में ले लिया गया था उनमें इलाके का जिलेदार और उसका जवान बेटा भी शामिल थे। पुलिस की रिपोर्ट थी कि जिलेदार ने अपने लठैत भेज कर उस राहगीर को पिटवाया है। जिलेदार खुद भी पीटनेवालों में शामिल था। साथ में उसका जवान बेटा और कुछ अन्य लठैत भी थे। मामला वहाँ रफा-दफा हो जाता अगर उस राहगीर की टाँग न टूट गई होती। मामूली मारपीट की तो पुलिस परवाह नहीं करती लेकिन इस मामले को तो पुलिस नजरअंदाज नहीं कर सकती थी। खैर, गवाह पेश हुए, पुलिस ने भी मामले की तहकीकात की और पता यही चला कि जिलेदार ने उस आदमी को पिटवाया है, और पीटनेवाले, राहगीर को अधमरा समझ कर छोड़ गए थे।

फिर यों हाथ झटक कर और सिर टेढ़ा करके मानो इस दुनिया में सही क्या है और गलत क्या है, इसका अंदाज लगा पाना कभी संभव ही न हो, हीरालाल कहने लगा, 'उन्हीं दिनों फीरोजपुर के नजदीक एक कस्बे में एक वारदात हो गई और केस जिला कचहरी में आया। मामूली-सा केस था। कस्बे में रात के वक्त किसी राह-जाते मुसाफिर को पीट दिया गया था और उसकी टाँग तोड़ दी गई थी।

'तीन महीने तक केस चलता रहा।' हीरालाल कहने लगा, 'केस में कोई उलझन, कोई पेचीदगी नहीं थी, पर हमारे शुक्ल जी को चैन कहाँ? इधर जिलेदार के हिरासत में लिए जाने पर, हालाँकि बाद में उसे जमानत पर छोड़ दिया गया था, कस्बे-भर में तहलका-सा मच गया था। जिलेदार को तो तुम जानते हो ना। जिलेदार का काम मालगुजारी उगाहना होता है और गाँव में उसकी बड़ी हैसियत होती है। यों वह सरकारी कर्मचारी नहीं होता।

इधर जिलेदार के हिरासत में लिए जाने पर, हालाँकि बाद में उसे जमानत पर छोड़ दिया गया था, कस्बे-भर में तहलका-सा मच गया था। जिलेदार को तो तुम जानते हो ना। जिलेदार का काम मालगुजारी उगाहना होता है और गाँव में उसकी बड़ी हैसियत होती है। यों वह सरकारी कर्मचारी नहीं होता । 'खैर! तो जब फैसला सुनाने की तारीख नजदीक आई तो शुक्ला जी की नींद हराम। कहीं गलत आदमी को सजा न मिल जाए।

'खैर! तो जब फैसला सुनाने की तारीख नजदीक आई तो शुक्ला जी की नींद हराम। कहीं गलत आदमी को सजा न मिल जाए। कहीं कोई बेगुनाह मारा न जाए। उधर पुलिस तहकीकात करती रही थी, इधर शुक्ला जी ने अपनी प्राइवेट तहकीकात शुरू कर दी। इससे पूछ, उससे पूछ। जिस दिन फैसला सुनाया जाना था उससे एक दिन पहले शाम को यह सज्जन उस कस्बे में जा पहुँचे और वहाँ के तहसीलदार से जा मिले। वह उनकी पुरानी जान-पहचान का था। उन्होंने उससे भी पूछा कि भाई, बताओ भाई, अंदर की बात क्या है, तुम तो कस्बे के अंदर रहते हो, तुमसे तो कुछ छिपा नहीं रहता है। अब जब तहसीलदार ने देखा कि जिला-कचहरी का जज चल कर उसके घर आया है, और जज का बड़ा रुतबा होता है, उसने अंदर की सही-सही बात शुक्ला जी को बता दी। शुक्ला जी को पता चल गया कि सारी कारस्तानी कस्बे के थानेदार की है, कि सारी शरारत उसी की है। उसकी कोई पुरानी अदावत जिलेदार के साथ थी और वह जिलेदार से बदला लेना चाहता था। एक दिन कुछ लोगों को भिजवा कर एक राह-जाते मुसाफिर को उसने पिटवा दिया, उसकी टाँग तुड़वा दी और जिलेदार और उसके बेटे को हिरासत में ले लिया। फिर एक के बाद एक झूठी गवाही। अब कस्बे के थानेदार की मुखालफत कौन करे? किसकी हिम्मत? तहसीलदार ने शुक्ला जी से कहा कि मैं कुछ और तो नहीं जानता, पर इतना जरूर जानता हूँ कि जिलेदार बेगुनाह है, उसका इस पिटाई से दूर का भी वास्ता नहीं।

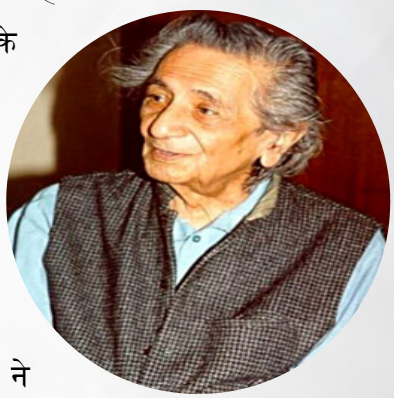

रावलपिंडी पाकिस्तान में जन्मे भीष्म साहनी (8 अगस्त 1915 - 11 जुलाई 2003) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। 1937 में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम ए करने के बाद साहनी ने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर ने। इन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबें जैसे टालस्टॉय आस्ट्रोवस्की इत्यादि लेखकों की किताबों का हिंदी में रूपांतर किया।

भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। उन्हें 1975 में तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, शिरोमणि लेखक अवार्ड (पंजाब सरकार), 1980 में एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन का लोटस अवार्ड, 1983 में सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड तथा 1998 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया गया। उनके उपन्यास तमस पर 1986 में एक फिल्म का निर्माण भी किया गया था।

प्रमुख रचनाएँ: उपन्यास*:* झरोखे, तमस, बसन्ती, मायादास की माडी, कुन्तो, नीलू निलिमा निलोफर, कहानी संग्रह*:* मेरी प्रिय कहानियां, भाग्यरेखा, वांगचू, निशाचर, नाटक*:* हनूश, माधवी, कबीरा खड़ा बजार में, मुआवज़े, आत्मकथा*:* बलराज माय ब्रदर, बालकथा*:* गुलेल का *खेल। साभार:* www.hindisamay.com

अनाथ

गांव की किसी एक अभागिनी के अत्याचारी पति के तिरस्कृत कर्मों की पूरी व्याख्या करने के बाद पड़ोसिन तारामती ने अपनी राय संक्षेप में प्रकट करते हुए कहा- "आग लगे ऐसे पति के मुंह में।"

सुनकर जयगोपाल बाबू की पत्नी शशिकला को बहुत बुरा लगा और ठेस भी पहुंची। उसने जबान से तो कुछ नहीं कहा, पर अन्दर-ही-अन्दर सोचने लगी कि पति जाति के मुख में सिगरेट सिगार की आग के सिवा और किसी तरह की आग लगाना या कल्पना करना कम-से-कम नारी जाति के लिए कभी किसी भी अवस्था में शोभा नहीं देता?

शशिकला को गुम-सुम बैठा देखकर कठोर हृदय तारामती का उत्साह दूना हो गया, वह बोली- "ऐसे खसम से तो जन्म-जन्म की रांड भली।" और चटपट वहां से उठकर चल दी, उसके जाते ही बैठक समाप्त हो गई।

शशिकला गम्भीर हो गई। वह सोचने लगी, पति की ओर से किसी दोष की वह कल्पना भी नहीं कर सकती, जिससे उनके प्रति ऐसा कठोर भाव जागृत हो जाए। विचारते-विचारते उसके कोमल हृदय का सारा प्रतिफल अपने प्रवासी पति की ओर उच्छ्वासित होकर दौड़ने लगा। पर जहां उसके पति शयन किया करते थे, उस स्थान पर दोनों बांहें फैलाकर वह औंधी पड़ी रही और बारम्बार तकिए को छाती से लगाकर चूमने लगी, तकिए में पति के सिर के तेल की सुगन्ध को वह महसूस करने लगी और फिर द्वार बन्द करके बक्स में से पति का एक बहुत पुराना चित्र और स्मृति-पत्र निकालकर बैठ गई। उस दिन की निस्तब्ध दोपहरी, उसकी इसी प्रकार कमरे में एकान्त-चिन्ता, पुरानी स्मृति और व्यथा के आंसुओं में बीत गई।

शशिकला और जयगोपाल बाबू का दाम्पत्य जीवन कोई नया हो, सो बात नहीं है। बचपन में शादी हुई थी और इस दौरान में कई बाल-बच्चे भी हो चुके थे। दोनों ने बहुत दिनों तक एक साथ रहकर साधारण रूप में दिन काटे। किसी भी ओर से इन दोनों के अपरिमित स्नेह को देखने कभी कोई नहीं आया? लगभग सोलह वर्ष की एक लम्बी अवधि बिताने के बाद उसके पति को महज काम-धाम ढूंढ़ने के लिए अचानक परदेश जाना पड़ा और विच्छेद ने शशि के मन में एक प्रकार का प्रेम का तूफान खड़ा कर दिया। विरह-बंधन में जितनी खिंचाई होने लगी, कोमल हृदय की फांसी उतनी ही कड़ी होने लगी। इस ढीली अवस्था में जब उसका अस्तित्व भी मालूम नहीं पड़ा, तब उसकी पीड़ा अन्दर से टीसें मारने लगी। इसी से, इतने दिन बाद, इतनी आयु में बच्चों की मां बनकर शशिकला आज बसन्त की दुपहरिया में निर्जन घर में विरह-शैया पर पड़ी नव-वधू का-सा सुख-स्वप्न देखने लगी। जो स्नेह अज्ञात रूप जीवन के आगे से बहा चला गया है सहसा आज उसी के भीतर जागकर मन-ही-मन बहाव से विपरीत तैरकर पीछे की ओर बहुत दूर पहुंचना चाहती है। जहां स्वर्णपुरी में कुंज वनों की भरमार है, और स्नेह की उन्माद अवस्था किन्तु उस अतीत के स्वर्णिम सुख में पहुंचने का अब उपाय क्या है? फिर स्थान कहां है? सोचने लगी, अबकी बार जो वह पति को पास पाएगी तब जीवन की इन शेष घड़ियों को और बसन्त की आभा भी निष्फल नहीं होने

पर जहां उसके पति शयन किया करते थे, उस स्थान पर दोनों बांहें फैलाकर वह औंधी पड़ी रही और बारम्बार तकिए को छाती से लगाकर चूमने लगी, तकिए में पति के सिर के तेल की सुगन्ध को वह महसूस करने लगी और फिर द्वार बन्द करके बक्स में से पति का एक बहुत पुराना चित्र और स्मृति-पत्र निकालकर बैठ गई।

देगी। कितने ही दिवस, कितनी ही बार उसने छोटी-मोटी बातों पर वाद-विवाद करके इतना ही नहीं, उन बातों पर कलह कर-करके पति को परेशान कर डाला है। आज अतृप्त मन ने भी एकान्त इच्छा से संकल्प किया कि भविष्य में कदापि संघर्ष न करेगी, कभी भी उनकी इच्छा के विरुध्द नहीं चलेगी, उनकी आज्ञा को पूरी तरह पालेगी, सब काम उनकी तबीयत के अनुसार किया करेगी, स्नेह-युक्त विनम्र हृदय से अपने पति का बुरा-भला व्यवहार सब चुपचाप सह लिया करेगी; कारण पति सर्वस्व है, पति प्रियतम है, पति देवता है।

बहुत दिनों तक शशिकला अपने माता-पिता की एकमात्र लाडली बेटी रही है। उन दिनों जयगोपाल बाबू वास्तव में मामूली नौकरी किया करते थे, फिर भी भविष्य के लिए उसे किसी प्रकार की चिन्ता न थी। गांव में जाकर पूर्ण वैभव के साथ रहने के लिए उसके श्वसुर के पास पर्याप्त मात्रा में चल-अचल संपत्ति थी।

किन्तु चाहे गुस्से के कारण से हो या गैरों की नौकरी करने में शीघ्र ही अमीर बनने की धुन से हो, उसने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया। शशि को बच्चों के साथ उसके मायके में छोड़कर वह आसाम चला गया। विवाह के उपरान्त इस दम्पति में यह पहला विच्छेद था।

इसी बीच, बिल्कुल ही असमय में शशिकला के वृध्द पिता कालीप्रसन्न के यहां पुत्र ने जन्म लिया। सत्य कहने में क्या है? भाई के इस जन्म से शशिकला को बहुत दु:ख हुआ और जयगोपाल बाबू भी इस नन्हे साले को पाकर विशेष प्रसन्न नहीं हुए।

अधिक आयु में बच्चा होने के कारण उस पर माता-पिता के लाड़-प्यार का कोई ठिकाना न रहा। उस नवजात छोटे दूध-पीते निद्रातुर साले ने अपनी अज्ञानता में न जाने कैसे अपने कोमल हाथों की छोटी-छोटी मुट्ठियों में जयगोपाल बाबू की सारी आशाएं पीसकर जब चकनाचूर कर दीं तब वह आसाम के किसी छोटे बगीचे में नौकरी करने के लिए चल दिया?

सबने कहा सुना कि पास में ही कहीं छोटा-मोटा काम-धन्धा खोज करके यहीं रहो तो अच्छा हो, किन्तु चाहे गुस्से के कारण से हो या गैरों की नौकरी करने में शीघ्र ही अमीर बनने की धुन से हो, उसने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया। शशि को बच्चों के साथ उसके मायके में छोड़कर वह आसाम चला गया। विवाह के उपरान्त इस दम्पति में यह पहला विच्छेद था।

पति के चले जाने से, शशि को दुधमुंहे भाई पर बड़ा क्रोध आया। जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में कह नहीं सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है। छोटा-सा नवजात शिशु मां के स्तनों को चूमता और आंख मींचकर निश्चिन्तता से सोता, और उसकी बड़ी बहन अपने बच्चों के लिए गर्म दूध, ठण्डा भात स्कूल जाने की देर इत्यादि अनेक कारणों से रात-दिन रूठकर मुंह फुलाये रहती और सारे परिवार को परेशान करती।

थोड़े दिन बाद ही बच्चे की मां का स्वर्गवास हो गया। मरते समय मां अपने गोद के बच्चे को लड़की के हाथ सौंप गई।

अब तो बहुत ही शीघ्र मातृहीन शिशु ने अपनी कठोरहृदया दीदी का हृदय जीत लिया। हा हा, ही-ही करता हुआ वह शिशु जब अपनी दीदी के ऊपर जा पड़ता और अपने बिना दांत के छोटे से मुख में उसका मुंह, नाक, कान सब कुछ ले जाना चाहता, अपनी छोटी-सी मुट्ठी में उसका जूड़ा पकड़कर जब खींचता और किसी कीमत पर भी हाथों में आई वस्तु को छोड़ने के लिए तैयार न होता, दिवाकर के उदय होने से पहले ही उठकर जब वह गिरता-पड़ता हुआ अपनी दीदी को कोमल स्पर्श से पुलकित करता, किलकारियां मार-मारकर शोर मचाना आरम्भ कर देता, और जब वह क्रमश: दी...दी...दीदी पुकार-पुकारकर बारम्बार उसका ध्यान बंटाने लगा और जब उसने काम-काज और फुर्सत के समय, उस पर उपद्रव करने आरम्भ कर दिए, तब शशि से स्थिर नहीं रहा गया। उसने उस छोटे से स्वतन्त्र प्रेमी अत्याचारी के

आगे पूरे तौर पर आत्मसमर्पण कर लिया। बच्चे की मां नहीं थी, इसी से शायद उस पर उसकी सुरक्षा का अधिक भार आ पड़ा।

शिशु का नाम हुआ नीलमणि। जब वह दो वर्ष का हुआ तब उसके पिता असाध्यम रोगी हो गये। बहुत ही शीघ्र चले आने के लिए जयगोपाल बाबू को लिखा गया। जयगोपाल बाबू जब मुश्किल से उस सूचना को पाकर ससुराल पहुँचे, तब श्वसुर कालीप्रसन्न मौत की घड़ियां गिन रहे थे।

उनके जोड़ों को मिलाकर किसी प्रकार उसे जोड़ा जा सकता है, किन्तु दो मानवी हृदयों को, जहां से फट जाते हैं, विरह की लंबी अवधि बीत जाने पर फिर वहां ठीक पहले जैसा जोड़ नहीं मिलता? कारण हृदय सजीव पदार्थ है; क्षणों में उसकी परिणति होती है

मरने से पूर्व कालीप्रसन्न ने अपने एकमात्र नाबालिग पुत्र नीलमणि का सारा भार दामाद जयगोपाल बाबू पर छोड़ दिया और अपनी अचल संपत्ति का एक चौथाई भाग अपनी बेटी शशिकला के नाम कर दिया।

इसलिए चल-अचल संपत्ति की सुरक्षा के लिए जयगोपाल बाबू को आसाम की नौकरी छोड़कर ससुराल चले आना पड़ा।

बहुत दिनों के उपरान्त पति-पत्नी में मिलन हुआ। किसी जड़-पदार्थ के टूट जाने पर, उनके जोड़ों को मिलाकर किसी प्रकार उसे जोड़ा जा सकता है, किन्तु दो मानवी हृदयों को, जहां से फट जाते हैं, विरह की लंबी अवधि बीत जाने पर फिर वहां ठीक पहले जैसा जोड़ नहीं मिलता? कारण हृदय सजीव पदार्थ है; क्षणों में उसकी परिणति होती है और क्षण में ही परिवर्तन।

इस नए मिलन पर शशि के मन में अबकी बार नए ही भावों का श्रीगणेश हुआ। मानो अपने पति से उसका पुन: विवाह हुआ हो। पहले दाम्पत्य में पुरानी आदतों के कारण जो एक जड़ता-सी आ गई थी, विरह के आकर्षण से वह एकदम टूट गई, और अपने पति को मानो उसने पहले की अपेक्षा कहीं अधिक पूर्णता के साथ पा लिया। मन-ही-मन में उसने संकल्प किया कि चाहे कैसे ही दिन बीतें, वह पति के प्रति उद्दीप्त स्नेह की उज्ज्वलता को तनिक भी म्लान न होने देगी।

किन्तु इस नए मिलन में जयगोपाल बाबू के मन की दशा कुछ और ही हो गई। इससे पूर्व जब दोनों अविच्छेद रूप से एक साथ रहा करते थे, जब पत्नी के साथ उसके पूरे स्वार्थ और विभिन्न कार्यों में एकता का संबंध था, जब पत्नी के साथ उसके जीवन का एक नित्य सत्य हो रही थी और जब वह उसे पृथक् करके कुछ करना चाहते थे तो दैनिकचर्या की राह में चलते-चलते अवश्य उनका पांव अकस्मात गहरे गर्त में पड़ जाता। उदाहरणत: कहा जा सकता है कि परदेश जाकर पहले-पहल वह भारी मुसीबत का शिकार हो गये। वहां उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो अकस्मात उन्हें किसी ने गहरे जल में धक्का दे दिया है। लेकिन क्रमश: उनके उस विच्छेद में नए कार्य को थेकली लगा दी गई।

केवल इतना ही नहीं; अपितु पहले जो उनके दिन व्यर्थ आलस्य में कट जाएा करते थे, उधर दो वर्ष से अपनी आर्थिक अवस्था सुधरने की कोशिश के रूप में उनके मन में एक प्रकार की जबर्दस्त क्रांति का उदय हुआ। उनके मन के सम्मुख मालदार बनने की एकनिष्ठ इच्छा के सिवा और कोई चीज नहीं थी। इस नए उन्माद की तीव्रता के आगे पिछला जीवन उनको बिल्कुल ही सारहीन-सा दृष्टिगत होने लगा।

नारी जाति की प्रकृति में खास परिवर्तन ले आता है स्नेह, और पुरुष जाति की प्रकृति में कोई खास परिवर्तन होता है, तो उसकी जड़ में रहती है कोई-न-कोई दुष्ट-प्रवृत्ति।

जयगोपाल बाबू दो वर्ष पश्चात् आकर पत्नी से मिले तो उन्हें हू-ब-हू पहली-सी पत्नी नहीं मिली। उनकी पत्नी शशि के जीवन में उनके नवजात साले ने एक नई ही परिधि स्थित कर दी है, जो पहले से भी कहीं अधिक विस्तृत और

संकीर्णता से कोसों दूर है। शशि के मन के इस भाव से वह बिल्कुल ही अनभिज्ञ थे और न इससे उनका मेल ही बैठता था। शशि अपने इस नवजात शिशु के स्नेह में से पति को भाग देने का बहुत यत्न करती, पर उसमें इसे सफलता मिली या नहीं, कहना कठिन है।

शशि नीलमणि को गोदी में उठाकर हंसती हुई पति के सामने आती और उनकी गोद में देने की चेष्टा करती, किन्तु नीलमणि पूरी ताकत के साथ दीदी के गले से चिपट जाता और अपने सम्बन्ध की तनिक भी परवाह न करके दीदी के कन्धे से मुंह को छिपाने का प्रयत्न करता।

शशि की इच्छा थी कि उसके इस छोटे से भाई को मन बहलाने की जितनी ही प्रकार की विद्या आती है, सबकी सब बहनोई के आगे प्रकट हो जाएे। लेकिन न तो बहनोई ने ही इस विषय में कोई आग्रह दिखाया और न साले ने ही कोई दिलचस्पी दिखाई। जयगोपाल बाबू की समझ में यह बिल्कुल न आया कि इस दुबले-पतले चौड़े माथे वाले मनहूस सूरत काले-कलूटे बच्चे में ऐसा कौन-सा आकर्षण है, जिसके लिए उस पर प्यार की इतनी फिजूलखर्ची की जा रही है।

प्यार की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें नारी-जाति चट से समझ जाती है। शशि तुरन्त ही समझ गई कि जयगोपाल बाबू को नीलमणि के प्रति कोई खास रुचि नहीं है और वह शायद मन से उसे चाहते भी नहीं हैं। तब से वह अपने भाई को बड़ी सतर्कता से पति की दृष्टि से बचाकर रखने लगी। जहां तक हो सकता, जयगोपाल की विराग दृष्टि उस पर नहीं पड़ने पाती।

और इस प्रकार वह बच्चा उस अकेली का एकमात्र स्नेह का आधर बन गया। उसकी वह इस प्रकार देखभाल रखने लगी, जैसे वह उसका बड़े यत्न से इकट्ठा किया हुआ गुप्त धन है। सभी जानते हैं कि स्नेह जितना ही गुप्त और जितना ही एकान्त का होता, उतना ही तेज हुआ करता है।

नीलमणि जब कभी रोता तो जयगोपाल बाबू को बहुत ही झुंझलाहट आती। अत: शशि झट से उसे छाती से लगाकर खूब प्यार कर-करके हंसाने का प्रयत्न करती; खासकर रात को उसके रोने से यदि पति की नींद उचटने की सम्भावना होती और पति यदि उस रोते हुए शिशू के प्रति हिंसात्मक भाव से क्रोध या घृणा जाहिर करता हुआ तीव्र स्वर में चिल्ला उठता, तब शशि मानो अपराधिनी-सी संकुचित और अस्थिर हो जाती और उसी क्षण उसे गोदी में लेकर दूर जाकर प्यार के स्वर में कहती- 'सो जा मेरा राजा बाबू, सो जा' वह सो जाता।

बच्चों-बच्चों में बहुधा किसी-न-किसी बात पर झगड़ा हो ही जाता है? शुरू-शुरू में ऐसे अवसरों पर शशि अपने भाई का पक्ष लिया करती थी; कारण उसकी मां नहीं है। जब न्यायाधीश के साथ-साथ न्याय में भी अन्तर आने लगा तब हमेशा ही निर्दोष नीलमणि को कड़ा-से-कड़ा दण्ड भुगतना पड़ता। यह अन्याय शशि के हृदय में तीर के समान चुभ जाता और इसके लिए वह दण्डित भाई को अलग ले जाकर, उसे मिठाई देकर खिलौने देकर, गाल चूम करके, दिलासा देने का प्रयत्न किया करती।

और इस प्रकार वह बच्चा उस अकेली का एकमात्र स्नेह का आधर बन गया। उसकी वह इस प्रकार देखभाल रखने लगी, जैसे वह उसका बड़े यत्न से इकट्ठा किया हुआ गुप्त धन है। सभी जानते हैं कि स्नेह जितना ही गुप्त और जितना ही एकान्त का होता, उतना ही तेज हुआ करता है।

परिणाम यह देखने में आता है कि शशि नीलमणि को जितना ही अधिक चाहती, जयगोपाल बाबू उतना ही उस पर जलते-भुनते रहते और वह जितना ही नीलमणि से घृणा करते, गुस्सा करते शशि उतना ही उसे अधिक प्यार करती।

जयगोपाल बाबू उन इंसानों में से हैं जो कि अपनी पत्नी के साथ कठोर व्यवहार नहीं करते और शशि भी उन स्त्रियों में से है जो स्निग्ध स्नेह के साथ चुपचाप पति की बराबर सेवा किया करती है। किन्तु अब केवल नीलमणि को लेकर अन्दर-

ही-अन्दर एक गुठली-सी पकने लगी जो उस दम्पति के लिए व्यथा दे रही है।

इस प्रकार के नीरव द्वन्द्व का गोपनीय आघात-प्रतिघात प्रकट संघर्ष की अपेक्षा कहीं अधिक कष्टदायक होता है, यह बात उन समवयस्कों से छिपाना कठिन है जो कि विवाहित दुनिया की सैर कर चुके हों।

नीलमणि की सारी देह में केवल सिर ही सबसे बड़ा था। देखने में ऐसा प्रतीत होता जैसे विधाता ने एक खोखले पतले बांस में फूंक मारकर ऊपर के हिस्से पर एक हंडिया बना दी है। डॉक्टर भी अक्सर भय प्रगट करते हुए कहा करते कि लड़का उस ढांचे के समान ही निकम्मा साबित हो सकता है। बहुत दिनों तक उसे बात करना और चलना नहीं आया। उसके उदासीन गम्भीर चेहरे को देखकर ऐसा प्रतीत होता कि उसके माता-पिता अपनी वृध्दावस्था की सारी चिन्ताओं का भार, इसी नन्हे-से बच्चे के माथे पर लाद गये हैं।

डॉक्टर भी अक्सर भय प्रगट करते हुए कहा करते कि लड़का उस ढांचे के समान ही निकम्मा साबित हो सकता है। बहुत दिनों तक उसे बात करना और चलना नहीं आया। उसके उदासीन गम्भीर चेहरे को देखकर ऐसा प्रतीत होता कि उसके माता-पिता अपनी वृध्दावस्था की सारी चिन्ताओं का भार, इसी नन्हे-से बच्चे के माथे पर लाद गये हैं।

दीदी के यत्न और सेवा से नीलमणि ने अपने भय का समय पार करके छठे वर्ष में पदार्पण किया।

कार्तिक में भइया-दूज के दिन शशि ने नीलमणि को नए-नए, बढ़िया वस्त्र पहनाये, खूब सजधज के साथ बाबू बनाया और उसके विशाल माथे पर टीका करने के लिए थाली सजाई। भइया को पटड़े पर बिठाकर अंगूठे में रोली लगाकर टीका लगा ही रही थी कि इतने में पूर्वोक्त मुंहफट पड़ोसिन तारा आ पहुंची और आने के साथ ही बात-ही-बात में शशि के साथ संघर्ष आरम्भ कर दिया।

(जारी ...)

साभार: www.hindisamay.com

- रवींद्रनाथ टैगोर

चौथी का जोड़ा

सहदरी के चौके पर आज फिर साफ - सुथरी जाजम बिछी थी। टूटी - फूटी खपरैल की झिर्रियों में से धूप के आडे - तिरछे कतले पूरे दालान में बिखरे हुए थे। मोहल्ले टोले की औरतें खामोश और सहमी हुई - सी बैठी हुई थीं; जैसे कोई बडी वारदात होने वाली हो। माँओं ने बच्चे छाती से लगा लिये थे। कभी - कभी कोई मुनहन्नी - सा चरचरम बच्चा रसद की कमी की दुहाई देकर चिल्ला उठता। नांय - नायं मेरे लाल! दुबली - पतली माँ से अपने घुटने पर लिटाकर यों हिलाती, जैसे धान - मिले चावल सूप में फटक रही हो और बच्चा हुंकारे भर कर खामोश हो जाता।

आज कितनी आस भरी निगाहें कुबरा की माँ के मुतफक्किर चेहरे को तक रही थीं। छोटे अर्ज की टूल के दो पाट तो जोड़ लिये गये, मगर अभी सफेद गजी क़ा निशान ब्योंतने की किसी की हिम्मत न पड़ती थी। कांट - छांट के मामले में कुबरा की माँ का मरतबा बहुत ऊंचा था। उनके सूखे - सूखे हाथों ने न जाने कितने जहेज संवारे थे, कितने छठी - छूछक तैयार किये थे और कितने ही कफन ब्योंते थे। जहां कहीं मुहल्ले में कपडा कम पड़ ज़ाता और लाख जतन पर भी ब्योंत न बैठती, कुबरा की माँ के पास केस लाया जाता। कुबरा की माँ कपडे क़े कान निकालती, कलफ तोड़तीं, कभी तिकोन बनातीं, कभी चौखूंटा करतीं और दिल ही दिल में कैंची चलाकर आंखों से नाप - तोलकर मुस्कुरा उठतीं।

आस्तीन और घेर तो निकल आयेगा, गिरेबान के लिये कतरन मेरी बकची से ले लो। और मुश्किल आसान हो जाती। कपडा तराशकर वो कतरनों की पिण्डी बना कर पकडा देतीं।

पर आज तो गजी क़ा टुकडा बहुत ही छोटा था और सबको यकीन था कि आज तो कुबरा की माँ की नाप - तोल हार जायेगी। तभी तो सब दम साधे उनका मुंह ताक रही थीं। कुबरा की माँ के पुर - इसतकक़ाल चेहरे पर फिक्र की कोई शक्ल न थी। चार गज गज़ी के टुकडे क़ो वो निगाहों से ब्योंत रही थीं। लाल टूल का अक्स उनके नीलगूं जर्द चेहरे पर शफक़ की तरह फूट रहा था। वो उदास - उदास गहरी झुर्रियां अंधेरी घटाओं की तरह एकदम उजागर हो गयीं, जैसे जंगल में आग भड़क़ उठी हो! और उन्होंने मुस्कुराकर कैंची उठायी।

मुहल्लेवालों के जमघटे से एक लम्बी इत्मीनान की सांस उभरी। गोद के बच्चे भी ठसक दिये गये। चील - जैसी निगाहों वाली कुंवारियों ने लपाझप सुई के नाकों में डोरे पिरोए। नई ब्याही दुल्हनों ने अंगुश्ताने पहन लिये। कुबरा की माँ की कैंची चल पडी थी।

सहदरी के आखिरी कोने में पलंगडी पर हमीदा पैर लटकाये, हथेली पर ठोडी रखे दूर कुछ सोच रही थी।

दोपहर का खाना निपटाकर इसी तरह बी - अम्मां सहदरी की चौकी पर जा बैठती हैं और बकची खोलकर रंगबिरंगे कपडों का जाल बिखेर दिया करती है। कूंडी के पास बैठी बरतन माँजती हुई कुबरा कनखियों से उन लाल कपडों को देखती तो एक सुर्ख छिपकली - सी उसके जर्दी मायल मटियाले रंग में लपक उठती। रूपहली कटोरियों के जाल जब पोले - पोले हाथों से खोल कर अपने जानुओं पर फैलाती तो उसका मुरझाया हुआ चेहरा एक अजीब अरमान भरी रौशनी से जगमगा उठता। गहरी सन्दूको - जैसी शिकनों पर कटोरियों का अक्स नन्हीं - नन्हीं मशालों की तरह जगमगाने लगता। हर टांके पर जरी का काम हिलता और मशालें कंपकंपा उठतीं।

याद नहीं कब इस शबनमी दुपट्टे के बने - टके तैयार हुए और गाजी क़े भारी कब्र - जैसे सन्दूक की तह में डूब गये। कटोरियों के जाल धुंधला गये। गंगा - जमनी किरने मान्द पड़ गयीं। तूली के लच्छे उदास हो गये। मगर कुबरा की बारात न आयी। जब एक जोडा पुराना हुआ जाता तो उसे चाले का जोडा कहकर सेंत दिया जाता और फिर एक नए

जोडे क़े साथ नई उम्मीदों का इफतताह (शुरुआत) हो जाता। बडी छानबीन के बाद नई दुल्हन छांटी जाती। सहदरी के चौके पर साफ - सुथरी जाजम बिछती। मुहल्ले की औरतें हाथ में पानदान और बगलों में बच्चे दबाये झांझे बजाती आन पहुंचतीं।

छोटे कपडे क़ी गोट तो उतर आयेगी, पर बच्चों का कपडा न निकलेगा। लो बुआ लो, और सुनो। क्या निगोडी भारी टूल की चूलें पडेंग़ी? और फिर सबके चेहरे फिक्रमन्द हो जाते। कुबरा की माँ खामोश कीमियागर की तरह आंखों के फीते से तूलो - अर्ज नापतीं और बीवियां आपस में छोटे कपडे क़े मुताल्लिक खुसर - पुसर करके कहकहे लगातीं। ऐसे में कोई मनचली कोई सुहाग या बन्ना छेड़ देती, कोई और चार हाथ आगे वाली समधनों को गालियां सुनाने लगती, बेहूदा गन्दे मजाक और चुहलें शुरु हो जातीं। ऐसे मौके पर कुंवारी - बालियों को सहदरी से दूर सिर ढांक कर खपरैल में बैठने का हुक्म दे दिया जाता और जब कोई नया कहकहा सहदरी से उभरता तो बेचारियां एक ठण्डी सांस भर कर रह जातीं। अल्लाह! ये कहकहे उन्हें खुद कब नसीब होंगे। इस चहल - पहल से दूर कुबरा शर्म की मारी मच्छरों वाली कोठरी में सर झुकाये बैठी रहती है। इतने में कतर - ब्योंत निहायत नाजुक़ मरहले पर पहुंच जाती। कोई कली उलटी कट जाती और उसके साथ बीवियों की मत भी कट जाती। कुबरा सहम कर दरवाजे क़ी आड़ से झांकती।

यही तो मुश्किल थी, कोई जोडा अल्लाह - मारा चैन से न सिलने पाया। जो कली उल्टी कट जाय तो जान लो, नाइन की लगाई हुई बात में जरूर कोई अडंग़ा लगेगा। या तो दूल्हा की कोई दाश्त: (रखैल) निकल आयेगी या उसकी माँ ठोस कडों का अडंगा बांधेगी। जो गोट में कान आ जाय तो समझ लो महर पर बात टूटेगी या भरत के पायों के पलंग पर झगडा होगा। चौथी के जोडे क़ा शगुन बडा नाजुक़ होता है। बी - अम्मां की सारी मश्शाकी और सुघडापा धरा रह जाता। न जाने ऐन वक्त पर क्या हो जाता कि धनिया बराबर बात तूल पकड़ ज़ाती। बिसमिल्लाह के जोर से सुघड़ माँ ने जहेज ज़ोड़ना शुरु किया था। जरा सी कतर भी बची तो तेलदानी या शीशी का गिलाफ सीकर धनुक - गोकरू से संवार कर रख देती। लड़की का क्या है, खीरे - ककडी सी बढती है। जो बारात आ गयी तो यही सलीका काम आयेगा।

और जब से अब्बा गुजरे, सलीके क़ा भी दम फूल गया। हमीदा को एकदम अपने अब्बा याद आ गये। अब्बा कितने दुबले - पतले, लम्बे जैसे मुहर्रम का अलम! एक बार झुक जाते तो सीधे खडे होना दुश्वार था। सुबह ही सुबह उठ कर नीम की मिस्वाक (दातुन) तोड़ लेते और हमीदा को घुटनों पर बिठा कर जाने क्या सोचा करते। फिर सोचते - सोचते नीम की मिस्वाक का कोई फूंसडा हलक में चला जाता और वे खांसते ही चले जाते। हमीदा बिगड़ क़र उनकी गोद से उतर जाती। खांसी के धक्कों से यूं हिल - हिल जाना उसे कतई पसन्द नहीं था। उसके नन्हें - से गुस्से पर वे और हंसते और खांसी सीने में बेतरह उलझती, जैसे गरदन - कटे कबूतर फड़फ़डा रहे हों। फिर बी - अम्मां आकर उन्हें सहारा देतीं। पीठ पर धपधप हाथ मारतीं।

तौबा है, ऐसी भी क्या हंसी। अच्छू के दबाव से सुर्ख आंखें ऊपर उठा कर अब्बा बेकसी से मुस्कराते। खांसी तो रुक जाती मगर देर तक हांफा करते। कुछ दवा - दारू क्यों नहीं करते? कितनी बार कहा तुमसे। बडे शफाखाने का डॉक्टर कहता है, सूइयां लगवाओ और रोज तीन पाव दूध और आधी छटांक मक्खन। ए खाक पडे ल़न डाक्टरों की सूरत पर! भल एक तो खांसी, ऊपर से चिकनाई! बलगम न पैदा कर देगी? हकीम को दिखाओ किसी। दिखाऊंगा। अब्बा हुक्का गुड़गुडाते और फिर अच्छू लगता। आग लगे इस मुए हुक्के को! इसी ने तो ये खांसी लगायी है। जवान बेटी की तरफ भी देखते हो आंख उठा कर?

और अब अब्बा कुबरा की जवानी की तरफ रहम - तलब निगाहों से देखते। कुबरा जवान थी। कौन कहता था जवान थी? वो तो जैसे बिस्मिल्लाह (विद्यारम्भ की रस्म) के दिन से ही अपनी जवानी की आमद की सुनावनी सुन कर ठिठक कर रह गयी थी। न जाने कैसी जवानी आयी थी कि न तो उसकी आंखों में किरनें नाचीं न उसके रुखसारों पर जुल्फें

परेशान हुईं, न उसके सीने पर तूफान उठे और न कभी उसने सावन - भादों की घटाओं से मचल - मचल कर प्रीतम या साजन माँगे। वो झुकी - झुकी, सहमी - सहमी जवानी जो न जाने कब दबे पांव उस पर रेंग आयी, वैसे ही चुपचाप न जाने किधर चल दी। मीठा बरस नमकीन हुआ और फिर कड़वा हो गया।

अब्बा एक दिन चौखट पर औंधे मुंह गिरे और उन्हें उठाने के लिये किसी हकीम या डाक्टर का नुस्खा न आ सका।

और हमीदा ने मीठी रोटी के लिये जिद करनी छोड़ दी। और कुबरा के पैगाम न जाने किधर रास्ता भूल गये। जानो किसी को मालूम ही नहीं कि इस टाट के परदे के पीछे किसी की जवानी आखिरी सिसकियां ले रही है और एक नई जवानी सांप के फन की तरह उठ रही है। मगर बी - अम्मां का दस्तूर न टूटा। वो इसी तरह रोज - रोज दोपहर को सहदरी में रंग - बिरंगे कपडे फ़ैला कर गुडियों का खेल खेला करती हैं।

कहीं न कहीं से जोड़ ज़मा करके शरबत के महीने में क्रेप का दुपट्टा साढे सात रुपए में खरीद ही डाला। बात ही ऐसी थी कि बगैर खरीदे गुज़ारा न था। मंझले मामू का तार आया कि उनका बडा लड़क़ा राहत पुलिस की ट्रेनिंग के सिलसिले में आ रहा है। बी - अम्मां को तो बस जैसे एकदम घबराहट का दौरा पड़ ग़या। जानो चौखट पर बारात आन खडी हुई और उन्होंने अभी दुल्हन की माँग अफशां भी नहीं कतरी। हौल से तो उनके छक्के छूट गये। झट अपनी मुंहबोली बहन, बिन्दु की माँ को बुला भेजा कि बहन, मेरा मरी का मुंह देखो जो इस घडी न आओ।

और फिर दोनों में खुसर - पुसर हुई। बीच में एक नजर दोनों कुबरा पर भी डाल लेतीं, जो दालान में बैठी चावल फटक रही थी। वो इस कानाफूसी की जबान को अच्छी तरह समझती थी।

उसी वक्त बी - अम्मां ने कानों से चार माशा की लौंगें उतार कर मुंहबोली बहन के हवाले कीं कि जैसे - तैसे करके शाम तक तोला भर गोकरू, छ: माशा सलमा - सितारा और पाव गज नेफे के लिये टूल ला दें। बाहर की तरफ वाला कमरा झाड़ - पौंछ कर तैयार किया गया। थोडा सा चूना मंगा कर कुबरा ने अपने हाथों से कमरा पोत डाला। कमरा तो चिट्टा हो गया, मगर उसकी हथेलियों की खाल उड़ ग़यी। और जब वो शाम को मसाला पीसने बैठी तो चक्कर खा कर दोहरी हो गयी। सारी रात करवटें बदलते गुजरी। एक तो हथेलियों की वजह से, दूसरे सुबह की गाडी से राहत आ रहे थे।

(जारी ...)

- इस्मत चुग़ताई

इस्मत चुग़ताई का जन्म 21 जुलाई, 1915, को बदायूँ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इन्हें 'इस्मत आपा' के नाम से भी जाना जाता है। उर्दू साहित्य की सर्वाधिक विवादास्पद और सर्वप्रमुख लेखिका जिन्होंने महिलाओं के सवालों को नए सिरे से उठाया। उन्होंने निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम तबक़े की दबी-कुचली सकुचाई और कुम्हलाई लेकिन जवान होती लड़कियों की मनोदशा को उर्दू कहानियों व उपन्यासों में पूरी सच्चाई से बयान किया है। इनका निधन 24 अक्टूबर, 1991 को हुआ। चोटें, छुईमुई, एक बात, कलियाँ, टेढी लकीर, जिद्दी, एक कतरा ए खून, इनकी प्रमुख रचनाओं में सम्मिलित हैं। साभार: www.hindisamay.com

कमजोर

आज मैं अपने बच्चों की अध्यापिका यूलिमा वार्सीयेव्जा का हिसाब चुकता करना चाहता था।

"बैठ जाओ, यूलिमा वार्सीयेव्जा।" मेंने उससे कहा, "तुम्हारा हिसाब चुकता कर दिया जाए। हाँ, तो फैसला हुआ था कि तुम्हें महीने के तीस रूबल मिलेंगे, हैं न?"

"नहीं,चालीस।"

"नहीं तीस। तुम हमारे यहाँ दो महीने रही हो।"

"दो महीने पाँच दिन।"

"पूरे दो महीने। इन दो महीनों के नौ इतवार निकाल दो। इतवार के दिन तुम कोल्या को सिर्फ सैर के लिए ही लेकर जाती थीं और फिर तीन छुट्टियाँ... नौ और तीन बारह, तो बारह रूबल कम हुए। कोल्या चार दिन बीमार रहा, उन दिनों तुमने उसे नहीं पढ़ाया। सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया और फिर तीन दिन तुम्हारे दाँत में दर्द रहा। उस समय मेरी पत्नी ने तुम्हें छुट्टी दे दी थी। बारह और सात, हुए उन्नीस। इन्हें निकाला जाए, तो बाकी रहे... हाँ इकतालीस रूबल, ठीक है?"

यूलिया की आँखों में आँसू भर आए।

"कप-प्लेट तोड़ डाले। दो रूबल इनके घटाओ। तुम्हारी लापरवाही से कोल्या ने पेड़ पर चढ़कर अपना कोट फाड़ डाला था। दस रूबल उसके और फिर तुम्हारी लापरवाही के कारण ही नौकरानी वान्या के बूट लेकर भाग गई। पाँच रूबल उसके कम हुए... दस जनवरी को दस रूबल तुमने उधार लिए थे। इकतालीस में से सताईस निकालो। बाकी रह गए चौदह।"

यूलिया की आँखों में आँसू उमड़ आए, "मैंने सिर्फ एक बार आपकी पत्नी से तीन रूबल लिए थे....।"

"अच्छा, यह तो मैंने लिखा ही नहीं, तो चौदह में से तीन निकालो। अबे बचे ग्यारह। सो, यह रही तुम्हारी तनख्वाह। तीन,तीन... एक और एक।"

"धन्यवाद!" उसने बहुत ही हौले से कहा।

"तुमने धन्यवाद क्यों कहा?"

"पैसों के लिए।"

"लानत है! क्या तुम देखती नहीं कि मैंने तुम्हें धोखा दिया है? मैंने तुम्हारे पैसे मार लिए हैं और तुम इस पर धन्यवाद कहती हो। अरे, मैं तो तुम्हें परख रहा था... मैं तुम्हें अस्सी रूबल ही दूँगा। यह रही पूरी रकम।"

वह धन्यवाद कहकर चली गई। मैं उसे देखता हुआ सोचने लगा कि दुनिया में ताकतवर बनना कितना आसान है।

अन्तोन पाव्लाविच चेख़व रूसी कथाकार और नाटककार थे। उनका जन्म दक्षिण रूस के तगानरोग में 29 जनवरी 1860 को हुआ और उनकी मृत्यु तपेदिक के कारण जरमनी के बेदेनवीलर नगर के एक स्वास्थ्यघर (स्पा) में 15 जुलाई 1904 को हुई। अपने छोटे से साहित्यिक जीवन में उन्होंने रूसी भाषा को चार कालजयी नाटक दिए जबकि उनकी कहानियाँ विश्व के समीक्षकों और आलोचकों में बहुत सम्मान के साथ सराही जाती हैं। साभार: www.hindisamay.com

संयम की परीक्षा

प्राचीन मिस्र में जुन्नून नाम के एक महान संत हूए। प्रसिद्ध मुसलमान पीर यूसुफ़ हुसैन धर्म की दीक्षा लेने उनके पास पहुँचे। संत ने एक संदूकची यूसुफ़ को दी और नील नदी के किनारे बसे अपने मित्र को दे आने के लिए कहा। यूसुफ़ हुसैन उसे लेकर चल पड़े। मार्ग में वे अपनी उत्सुकता को न रोक सके और संदूकची खोलकर देखने लगे। उसे खोलते ही एक चूहा निकलकर भाग गया।

जब यूसुफ़ मित्र के पास पहुंचे तो संदूकची को खाली पाकर मित्र गंभीरता से बोले 'अब जुन्नून तुम्हें दीक्षा नहीं देंगे। यह संदूकची तुम्हारे संयम की परीक्षा लेने के लिए भेजी गयी थी। जब तुम एक चूहे की रक्षा न कर सके तो परमात्मा तो कैसे धारण करोगे?'

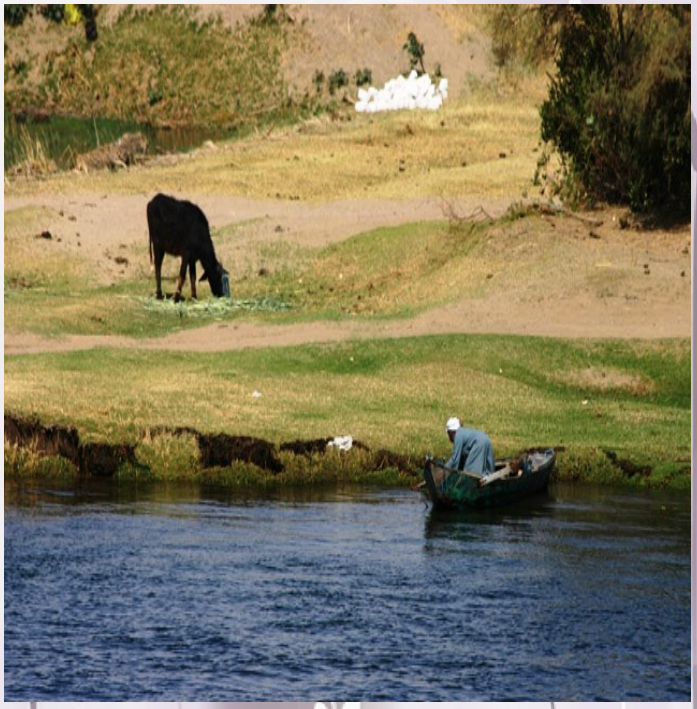

खिन्न मन यूसुफ़ जुन्नून के पास पहुंचे। संत ने कहा, 'युसूफ जुन्नून अभी तुम परम ज्ञान के अधिकारी नहीं हो। धर्म का ज्ञान पाने के लिए धैर्य एवं संयम की आवकश्यता होती है, जिसका तुम्हारे पास अभाव है। तुम लौट जाओ और पहले चित्त की दुर्बलता दूर करो।' कालांतर में यूसुफ़ आत्मसंयम के बल पर एक प्रख्यात संत हुए।

-डॉ. रश्मि शील, नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट भारत से

पाठक कहते हैं

हम नए कवियों / लेखकों से उनके लेखों / काव्य रचनाओं के नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में पर्काशन हेतु योगदान की अपेक्षा करते हुए आमंत्रित करते हैं। सभी लेख / काव्य रचनाएँ नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में निशुल्क पर्काशित होंगी।

-संपादक मंडल, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

हमें भवन ऑस्ट्रेलिया की ईमारत निर्माण परियोजना के लिए आर्थिक सहायता की तलाश है।

कृपया उदारता से दान दें।

नोट: हम अपने पाठकों की स्पष्टवादी, सरल राय आमंत्रित करते हैं।

हमारे साथ विज्ञापन दें!

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में विज्ञापन देना आपकी कंपनी के ब्रांड के लिए सबसे अच्छा अवसर प्रदान करता है और यह आपके उत्पादों और / या सेवाओं का एक सांस्कृतिक और नैतिक संपादकीय वातावरण में प्रदर्शन करता है।

भवन ऑस्ट्रेलिया भारतीय परंपराओं को ऊँचा रखने और उसी समय बहुसंस्कृतिवाद एकीकरण को प्रोत्साहित करने का मंच है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : info@bhavanaustralia.org

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया राजपत्र

भारतीय विद्या भवन (*भवन*) एक गैर लाभ, गैर धार्मिक, गैर राजनीतिक, गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) है| भवन भारतीय परंपराओं को ऊपर उठाये हुए, उसी समय में आधुनिकता और बहुसंस्कृतिवाद की जरूरतों को पूरा करते हुए विश्व के शैक्षिक और सांस्कृतिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है| भवन का आदर्श, '*पूरी दुनिया एक ही परिवार है*' और इसका आदर्श वाक्य: '*महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो*' हैं|

दुनिया भर में भवन के अन्य केन्द्रों की तरह, भवन ऑस्ट्रेलिया अंतर-सांस्कृतिक गतिविधियों की सुविधा प्रदान करता है और भारतीय संस्कृति की सही समझ, बहुसंस्कृतिवाद के लिए एक मंच प्रदान करता है और ऑस्ट्रेलिया में व्यक्तियों, सरकारों और सांस्कृतिक संस्थानों के बीच करीबी सांस्कृतिक संबंधों का पालन करता है|

अपने संविधान से व्युत्पन्न भवन ऑस्ट्रेलिया **राजपत्र** का कार्य है:

- जनता की शिक्षा अग्रिम करना, इनमें हैं:
    1. विश्व की संस्कृतियां (दोनों आध्यात्मिक और लौकिक),
    2. साहित्य, संगीत, नृत्य,
    3. कलाएं,
    4. दुनिया की भाषाएँ,
    5. दुनिया के दर्शनशास्त्र |
- ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक समाज के सतत विकास के लिए संस्कृतियों की विविधता के योगदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा|
- समझ और व्यापक रूप से विविध विरासत के ऑस्ट्रेलियाई लोगों की सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय विविधता की स्वीकृति को बढ़ावा|
- भवन की वस्तुओं को बढ़ावा देने या अधिकृत रूप में शिक्षा अग्रिम करने के लिए संस्कृत, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में पुस्तकों, पत्रिकाओं और नियतकालिक पत्रिकाओं, वृत्तचित्रों को संपादित, प्रकाशित और जारी करना|
- भवन के हित में अनुसंधान अध्ययन का पालन करना और शुरू करना और किसी भी अनुसंधान को जो कि शुरू किया गया है, के परिणाम को मुद्रित और प्रकाशित करना| www.bhavanaustralia.org

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण है कि क्या वो जो विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न स्थानों में इसके लिए काम करते हैं और जो इसके कई संस्थानों में अध्ययन करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में एक मिशन की भावना विकसित कर सकें, चाहे एक छोटे माप में, जो उन्हें मौलिक मूल्यों का अनुवाद करने में सक्षम बनाएगा|

एक संस्कृति की रचनात्मक जीवन शक्ति इसमें होती है: कि क्या जो इससे सम्बंधित हैं उनमें 'सर्वश्रेष्ठ', हालांकि उनकी संख्या चाहे कितनी कम हो, हमारे चिरयुवा संस्कृति के मौलिक मूल्यों तक जीने में आत्म-पूर्ति पाते हों|

यह एहसास किया जाना चाहिए कि दुनिया का इतिहास उन पुरुषों की एक कहानी है जिन्हें खुद में और अपने मिशन में विश्वास था| जब एक उम्र विश्वास के ऐसे पुरुषों का उत्पादन नहीं करती तो इसकी संस्कृति अपने विलुप्त होने के रास्ते पर है| इसलिए भवन की असली ताकत इसकी अपनी इमारतों या संस्थाओं की संख्या जो यह आयोजित करती है, में इतनी ज्यादा नहीं होगी, ना ही इसकी अपनी संपत्ति की मात्रा और बजट में, और इसकी अपनी बढ़ती प्रकाशन, सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों में भी नहीं होगी| यह इसके मानद और वृत्तिकाग्राही, समर्पित कार्यकर्ताओं के चरित्र, विनम्रता, निस्वार्थता और समर्पित काम में होगी| उस अदृश्य दबाव को केवल जो अकेला मानव प्रकृति को रूपांतरित कर सकता है, को खेल में लाते हुए केवल वे अकेले पुनर्योजी प्रभावों को रिहा कर सकते हैं|

महात्मा गाँधी कहते हैं

- बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्तव्य है।
- जो कला आत्मा को आत्मदर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला ही नहीं है।
- जो अंतर को देखता है, ब्राह्मा को नहीं, वाही सचा कलाकार है।
- सच्चे कवि तो वे मने जाते है, जो मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु देख सके।
- क्रोध एक प्रचंड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है, वह उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता, वह स्वयँ अपने को जला लेगा।

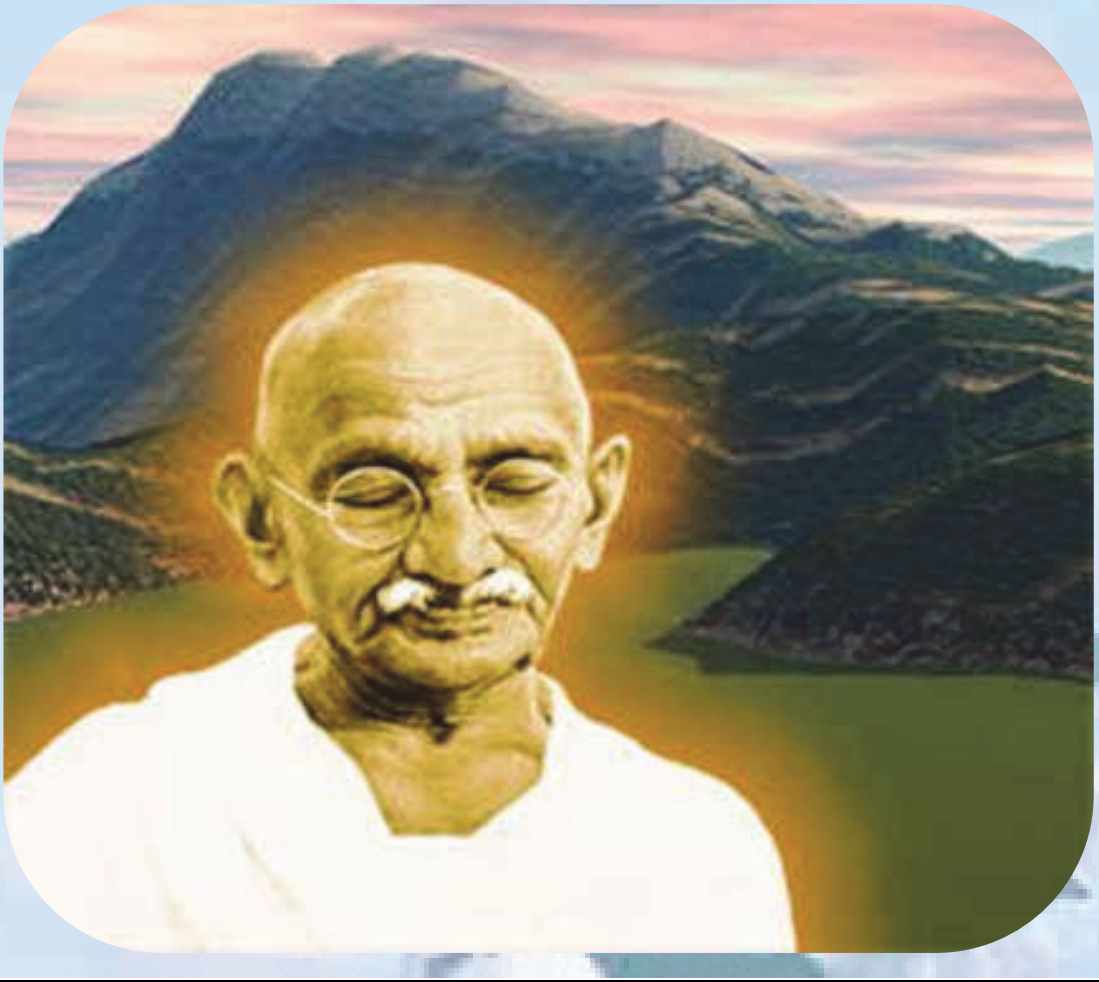

taxation & business guru

Taxation Guru - using their knowledge and expertise to stay ahead of the every changing taxation legislation.

Whether you're a company, partnership, trust or sole trader, you need help with Super, Salary packages, Fringe benefits, Investments and deductions.

Call the Taxation Guru, the power to help you make the right decisions.

We endeavour to take the burden off your shoulders and make life easy by providing a broad range of tax related services.

Contact us at:
Suite 100, Level 4, 515 Kent Street, Sydney 2000
t: 1300 GURU4U (487848) & +612 9267 9255
e: gambhir@bmgw.com www.taxationguru.com.au

THE TAX INSTITUTE

CHARTERED TAX ADVISER

BMG GROUP

www.taxationguru.com.au